क्रम-संख्या 50289

ग्रन्थ-नाम गुटका ग्रन्थकर्ता अज्ञात

विषय काव्य लिपि देवनागरी

पत्र-संख्या पत्र-प्रमाण × मि० मि०

पंक्तियां अक्षर

पाठ-संख्या पूर्ण/अपूर्ण

प्रारम्भ :-

Acc. No:→ 50289

गुटका। (हिन्दी)

श्री सतं पातसा है के गो
हुमनेतट की लागमा प्रेम
तमादिदो ईपा मदेरो ईदु
ईमुगलाफल संबवेबहु
ही तोक ग्रालमारो
सा है कैगो हुमनबट की
लाग प्रेमतगी रेसा कु
ईसो हो कैलक के
कुईलकी दिवनागी
[illegible]

गुटका हिन्दी।

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ रागमा
लालिख्यते ॥ जब सुनो [illegible] नहू
याल संतन को एहि साथ मेरे सु
सक दीयो हाथ याजनी की बात
पाली नाथ जु बनाई है ॥ जब तो
छत्तीस राग सब ही को की थोभ
का सरागमाजी ये फा वसो ईबा
सी ब जाई है ॥ भैरव को बडो भा
र बिष्णास को सुरम कास लगनी त
के स्ती थैया हठी राम कली बनाई है ॥

रागमा
१

प्रभातहि बडो उदार येसो तुधो
देवगांधार पार नांल ऊयाको पंच
मस्वरतांई हे। बसंत तो उगंम तो सुर
भूपाल राग ताल धुर सुबर की
सुषगसार सोरागमईसो हार हे ॥
देसाषको दसाय पार बेलावल
बडा बिस्तार सारमध्यसमरस
सो असावरि बनाई हे ॥ टोडी
को त्रिविधगांन जासिका येधु
रुध्यांन मानतांनगांनतांरु ये

जैनसरी जुमाई है ॥२१॥ कान्हे
रा की कोन हार गुजरी गेई न
भार सारंग कोसारसो मल्हार
मेघ बधाई है ॥ श्रीरागगान सुर
दार सिंधु तोस दाउ दार नट हो
केहारली ये पर वी मांडाई है ॥
षंभाय ती छत्ती सभीर रायसे
तेरमे जु ओर आं छो नी कोधो
रं सो गौरी जो बनाई है ॥ दीपक
रोदी ये के साथ काम्हेरा की का

हाकऊबात भांतभली भाईहै ॥ ३
ता यकीकोनांहिमोल कानडा
कोकीयोतोल बिहागडेकी बात
सोभलीभांतभाईहे॥ केदार
तोकाहांनरूप इंद्रोनही अडाणो
रूप कोनगवेरूपसो तो मारु
कोभेदताईहे॥ सामेरीसघासुरा
य जेजेवंतीयतो आगरा राग
गाहेरगमेंसो सबसोगाईहे॥
परजतोपिछलीरात मेवाडोप २

योकीरतार सबहीसाथरंगमा
लसरी बोलाई है॥ रागकाव
डापरमांन महाजांनेकीयोगां
न पांनपांनी तजीमानेम्रत
नीसगाईहै॥ तीनकीरूपाप
रमांन कवीतकीयोहैगांनं
नीसदिनधरीध्यांन कांहां
नकांहां तंम्री रूलसीरनांईहै॥

इतिश्रीरागमालसंपूर्ण॥

कखगघङचछजझञटठ

डढणतथदधनपफबभम

अथ आंदापाक लषीयेहीस ॥ आंदु सेर २
ली ए उस कुटीये ॥ पछे कटा ५ मांहे चढावी
ये ॥ पछे गोल सेर २ मुकीये पछे उकालीये ॥
पछे कलक नाषीये ॥ ते कहीये छीये ॥
तज टां. क ५ तमाल पत्र टांक ५ एलची टां
क ५ नाग केसर टांक ५ लवंग टांक ५ सुंठ
टांक ५ पीपर टांक ५ मरी टांक ५ एर लोबा
नो उला वाटी कपड छाण करीये पछे मां
हे नाषीये हलावी उतारीये ॥ पछे वासणमां
मां घाली मुकीये टांक ५ ने आसरे षाई

ये॥३॥ धूप मैं डाले॥ अरूचि नै टाले॥ अबु
जाई नै टाले॥ ...नै टाले॥ ... ई ति
श्री दापक कै संपूर्ण॥ अथ कौंचा पा
क लीष्यते॥ कौंचां सेर॥१॥ पुरो सेर॥१॥
पड वास सेर॥१॥ गुंद सेर॥१॥ बडबीज
सेर॥१॥ ए वो नो चार मेली कीणां वारीच्ये॥
सेर ४ कपड छाण करीये॥ पछै दुध सेर ३२
मो है नाषी के ढाया माहें घाली पे चुले च
ढावीये॥ पछै मंद मंद अग्नी कीजे॥ पछे
औं डस्याये तारे घी ई सेर २ मुंकीये पछे नी

सया सेर ।। पोटली बांधी [illegible] मां मुकीये
पछे नीचोई लीजे कुचा कंद [illegible] नाषीये ।। प
छे दाप्र हार थाय तारे मांहे घी ई सेर रखा
वो ।। पछे केटलुंक नाषीये ते कहीये छीये ।।
तज टांक ५ तमालपत्र टांक ५ इलाची टां
क ५ नागकेसर टांक ५ लवंग टांक ५ अक
लकरो टांक ५ सुंठ टांक ५ पीपर टांक ५ म
री टांक ५ सुकड टांक ५ तगर टांक ५ अगर
टांक ५ समुद्रसोष टांक ५ मुसली टांक ५

नवापुनेदालेपुरनेदालेकरसाारोगनेदा
लेइतिषडसुसपाकसमाप्तः ३
अथसुंठपाकलिष्यते सुंठसेर२गीणि
पालेयेउधसेर१६मध्येपचावीयेसुंठडु
धमां.पीहराबीये पछेजाउयापतारेघी
सेर१मुकीयेपछेदााणादारषायतारेकल
कनाषीयेलेक्रहीयेछीये तजटांप तमा
लपत्रटांक५ एलचीटांक५ नागकेसरटांक
५ लवंगटांक५ कंकोलटांक५ जावेत्रीटांक५
जायफलटांक५ केसरटांक५ पीपलीट

४ अपुठ वंग पाऊ जी षाते॥ लुवंगसेर॥ बारी
मुक्रो कजे॥ पछे दुधसेर २ माहे पचावीये
पछे दो लाहार थाय तारे धी इ सेर २॥ मुकीये
पछे धुणा षण तुथाय तारे कलक नाषीये॥
तेकहीयेछीये॥ तजटांक ५ तमालपत्रटां
क ५ एलची टांक ५ नागकेसर टांक ५ कम
लकाकडी टांक ५ सुकुडटांक ५ अगरटां
क ५ तगरटांक ५ केसरटांक ५ जायफलटां
क ५ जावंत्री टांक ५ अकलकरो टांक ५
बरास टांक ५ बंसलोचन टांक ५ एली

अे पछे जाउ थाय तारे घी ई सेर २ मांहे ना
षीये॥ पछे मांगा षणाने पाय तारे कलेक
ना षीये तेके हीये छीये॥ लवंग टांक ५
तज टांक ५ तमालपत्र टांक ५ एलचीं
टांक ५ नागकेसर टांक ५ रेणुक टां
क ५ अकलकरो टांक ५ समुद्रसोष टां
क ५ अजमो षोरासानी टांक ५ चुनी
कबाबा टांक ५ षेरी गुंदर टांक ५ जाय
फल टांक ५ जावंत्री टांक ५ हींगलोक

१ छेदाणा हारवाघ्ताा रे क लक नोबीये
तेकहीयेछीये॥ लज टांक ५ तमाल पत्र
टांक ५ एलची टांक ५ नागकेसर टांक ५
जायफल टांक ५ जावत्री टांक ५ लवंग टां
क ५ अकलकरो टांक ५ अजमो षोरासा
नी टांक ५ वीडंग टांक ५ चीत्रो टांक ५ पर
धारो टांक ५ सुखा टांक ५ सुंठ टांक ५ पी
पर टांक १० मरी टांक ५ च्वक टांक ५ अ
जमोदी टांक ५ हलद टांक ५ दारुहल
दर टांक ५ त्राता वरी टांक ५ रासनो टांक ५

देवदारटांक५ तजबीजेटांक५ सागोडी
टांक५ जेबानीटांक५ पुसकरमूलटांक५
पीपलीमूलटांक५ कुसटांक५ जांबुपल१
चोहंपल१ पंगपल१ त्रम्बकपल१ सर्व
कीएकठी कूपडछाणकरीमांहेनाषीयु
हेलावी उतारीये॥ पछेपाडसेर४ मांहे
नाषीये॥ पछेचोपडावासणमांघाली
से॥ पछेटांक५ देवदारसरषवराबीयेलो
सकूड़नैसले॥ दीचणकूपलाहोपते

हैवेटाले।। केडकमतीहोय तेहनेसाले॥
कोसोकजलोहोयतेहनेसालो॥ केडक
लतीहोयतेघूरे॥ सोधिकलतीहोय
तेहनेराले॥ केरनेटाले निबुजाईनेटा
ले निर्धीतनेराले॥ एटलारोगनेटाले॥
रीति : अथजसणपाकजीष्यते
जसण सेर २ जीणुकरीये॥ पछेदुध
सेर ३२ माहेनाषीचुलेचढावीये॥ पछे
अनपाचेएहवीअग्नितलेकीजे॥ पछे

जादुधासुतारे घीई सेर १ मांहे ना षीये पु
छै मधु सेर १ मांहे ना षीये ।। पछे कुल्के ना
षीये ले कुहाये छीये ।। बज बीज टांक २ ।।
सुंव टांक २ ।। पीपुर टांक २ ।। मरी टांक २ ।।
परधारो टांक २ ।। चीतरो टांक २ ।। उपलो
र टांक २ ।। पुसकरमूल टांक २ ।। अजमो
दी टांक २ ।। हलद स्टांक २ ।। दारुहलदर टां
सुंठ टांक २ ।। पद्मकाठ टांक २ ।। एलची टांक २ ।।
तेज टांक २ ।। तमालपत्र टांक २ ।। नागके

सरटांक २॥ सलाकरी टांक २॥ सुरमा टांक २॥
साखोडी टांक २॥ देवदार टांक २॥ रेणुक टांक
२॥ वज टांक २॥ रासना टांक २॥ गोखरू
टांक २॥ मोथ टांक २॥ एरजा कजकी॥
वाटी मुक्ती करी ये पाक मां नाषीये॥ पछे पा
उ सेर मां हे नाषी हलावीसे॥ पछे हे वुड
तारीये॥ पछे चो पडा बास ण मां घाली ये
पछे टांक प ने च्यार सरषवरा वीये॥ ना य
रोग नेरा जे सूल नेरा जे उध्रमन नेरा जे
च्यांतरगल नेराजे करमी नेराजे प्रभ्यां

सनेराले॥ बुकारीनेरालेगोलानेराले॥
हेडकीनेराले॥ उदरीनेराले॥ पीयानेराले
आफरानेराले॥ नबुलाईनेराले॥ कोढनेरा
ले॥ कोरवलतीहोयतेदूरे॥ पकाघातने
राले॥ सरूला बातनेराले॥ अग्नीमंदने
राले॥ माधुकरतु होयलेहेनेराले॥ भ्रम
रोगनेराले॥ सोध्यकललीहोयतेहेने
राले॥ शरीरनेपुष्टिकरे कललरनेराले
रेटजारोगानेराले इतिलसणपाकस
मापत:

अथ अरंडी पाक लषीयेछीये एरंडीना
गोजा सेर २ नी गोल करीये ॥ पछे दुध
सेर ३२ मां हे नाषीये चुले चनाषीये पछे
जाडु थाय तारे घी ई सेर २ मां हे नाषीये
पछे दाणादार थाय तारे कूजक नाषीये
तेऊं ही पछीये ॥ लवींग टांक ५ तमालप
त्रटांक ५ एलचीटांक ५ नागकेसरटांक
५ जायफलटांक ५ जावंत्री टांक ५ लवं
गटांक ५ अकलकरोटांक ५ चंभक स

क ५ चीतरो टांक ५ पीपेर टांक ५ पीपलीमू
ल टांक ५ बीडंग टांक ५ अजमोदि टांक ५ ता
लीसपत्र टांक ५ वज टांक ५ हलदर टांक ५
दारुहलदर टांक ५ शालावरी टांक ५ सु
आ टांक ५ जीरू टांक ५ कालुंजीरू टांक ५
मजीठ टांक ५ गोषरू टांक ५ रासना टां
क ५ देवदार टांक ५ बलबीज टांक ५ सुं
ठ टांक ५ सांगोडी टांक ५ पुसकरमूल
टांक ५ अकलोह टांक ५ रेणुक टांक ५
नागर टांक ५ छाडी टांक ५ लोह टांक ५

बकारी ने गी ले इति एरंडी पाक समाप्त ः

~~अथ कडा भा न्सी पाते~~

अथ रीगंणी पाक ली ष्यते रीगणी पंचा
ग सेर १२ पाणी सेर ३२ मांहे कवाथ करि
मांहे हरडे पल १०० मुकीये पछे चोथे भा
ग पाणी रहे तारे ३ तारीये पछे दाडु माय
तो रे कलक ना षीये ते कही ये छीये सुंठ
टां० ५ पीपर टां० ५ मरी टां० ५ तज टां० ५
तमालपत्र टां० ५ एलची टां० ५ नागके
सर टां० ५ एटला कलक मांहे नाषीये हला

नीये १ छँम ध सेर ॥ मों है ना पीं उतारीये
पछे चो प्रडावा सणमोमरीमुक्ती ये दो ऊ ५
नेत्रां सरे ष वरावीये. वायंनी उध्र सनेरा
ले पीत्तनी उध्रसने टाले ॥ कफनी उध्र
सनै टाले ॥ कफनेव टाले पीनस रोग नेटा
ले इति त्रिगणी पाक समाप्तः

१२

अथ सोनामषीनां अनुपान लष्यते ॥

सोनामषी टांक ४ तेहेनी पडीयो २१

करीये ॥ तेहेनुं अनुपान ॥ मध साथे

षाय तो ईंद्री बलवान थाये १ षांड साथे

षाय तो गरमी पीत्त जाय १॥ साकर

रसा थे षाय तो अंग बल थाय ॥ २॥

बीजोरा साथे षाय तो भूष लागे ॥४॥

द्राषनां फल साथे षाय तो घरडो

नषाय ॥ ५ ॥ गायं नामो षणसाये षा
युतो घर डो है युतो ज कान याय ६
को मसा नारससा येषाय तो कफ
जाया ॥ ७ ॥ काकै ड नारससाये षाय
तो को पुड षती रहे ॥ ८ ॥ नगोहना
रससाये षाय तो कफ जाये ॥ ९ ॥
कैा बजषाय हाष पग कल ता रहे
॥ १० ॥ लौब नार ससाये षाय तो मेट

कुष्टु दूरि है ॥१०॥ आंवा नारस साथे
षाय तो पांडुरोग जाइ ॥११॥ गोष
रू नारस साथे षाय तो धातु पुष्ट था
य ॥१२॥ षुरासानी अजमा साथे षा
य तो गोलो मरी जाय ॥१३॥ छोली
ना दुध साथे षाय तो केउडु षली रहे
॥१४॥ गाजरना दुध साथे षाय तो जी
भ बोलती सारी थाय ॥१५॥ सुरा

कोमानारससाथेषायतोप्रमेहजा
ये ॥१५॥ अजमानारससाथेषाय
तोहाथपगकूलतारहे ॥ दी॥ अने
सरदीजाये ॥१६॥ पीपरनापाणी
साथेषायतोमाथुंदुषतुंरहे ॥१७॥
लवंगनारससाथेषायतोअरुचीसा
येपीनघणीथाय ॥१८॥ पतीरीनादु
धसाथेषायतोस्त्रीसुंसंतेहथाय ॥१९

तजैमीरससापेषायतोसापनुवी
षतलरें॥२०॥ डाडमनारससापे
षायतोहीकब्जावतीहोयतेरहैरा
सांड्गीनाहूधसापेषायतीदसघ
णग्नैरषाय॥२२॥ एमीदीआव
लनातणलंप्पाकेषडीएकंबीसभ
रीनेएकंदीसरहातासुधीषावीतणा
पांयसुही॥

अथ समुद्रफलनु अनुपान लषी

येछीये॥ समुद्रफलमायनाघीई

सुअंजनकीजेतोपडलजाय॥१॥

समुद्रफलमुत्रघालीनेअंजनकी

जेतोसापनुविषउतरै॥२॥ समु

द्रफलनेहलदरसुंगायनाघीसुंजे

अनकीजेतोगंडमालाजाय॥३॥

समुद्रफलनेलीबुनीजडतमाखानु

५५

ग्रं घसीनैजेपनकीजेतो वीछीनुं
विषउतरे ४।। समुद्रफलजवासी
पाणीनंगेउनारसमुंनासदीजे
तो मापुंडपतुंरहे ।।५।। समुद्र
फलनीफलामुंनासदीजेतोस
नेपानजाय।।६।। समुद्रफलनी
रगुंडीनारसमुंअंजनकीजेतो
फुलुंजाय।।७।। समुद्रफलभीगाते

ल सुंचं मन कीजे तो नेत्र रोग जाय ॥
८ ॥ समुद्र फल माल खी मो ल सुं षा
ये तो मगी रोग वा सु आव तेर है ॥ ६ ॥
समुद्र फल भांगरा नार स सा ये ष
वरा ची ये तो बे हे रार ह जे ॥ १० ॥ स
मुद्र फल अजमो द सुं नास दीजे तो
माथ्पुदु ष तुं र है ॥ ११ ॥ समुद्र फल
षांड सुं षा य तो षा तु जा तीर है ॥ १२

समुद्रफलतुंगमुंषाईयेमोपेटवं
धाजायदुषतुरहे १३ समुद्रफल
अजमोदमुंषाईयेतोमोहाराविष
उतरे १४ समुद्रफलनीबुआमुं
षाईयेतोसूलजाये १५ समुद्रफल
हस्तपगेवजंसुमर्दनकीजेतो
प्रस्वेदपीडंजाय १६ समुद्रफल
लीबुमुंषाईयेतोकमरबातनी

पे॥ ७॥ समुद्रफल दुधसुं पाईये तो
अतिसार जाय॥ १८ समुद्रफल जी
बु नार सम सुमर्दन कीजे तो कमल बा
त जाय॥ १९ समुद्रफल निरगुंडी
सुं खायतो पेट व्यथा जाय॥ २०॥
समुद्रफल हरडे छाली नाघ तसुंदी
जे तो कमल बायु जाय॥ २१॥ समु
द्रफल अजमा सुं खाय तो अजीर

ण जाये २२॥ समुद्र फल को जी छाली
ना मुत्र सुं अंजन कीजी ये तो छा याप
उल जाये २३ समुद्र फल सुं रुलव
ण सुं मात्रा मुत्र सुं लेपन कीजे तो म
स्सक सूल जाय २४ समुद्र फल अरी
पानी काल गो मुत्र सुं मसली रस का दी
७ लहे नासदी जे तो अंधा पो जाय २५
समुद्र फल अजमो पीपे रस्तो परा सु

वंसमान भाग षोडसु गोलीयां कीजै २५
प्रभाते षाय तौ अंधा है तौ जाय २६
समुद्र फल वडी छालीना दुध मध्ये
जंनकी जे तो आंषे तेज आवे २७
समुद्र फल लवण घृत मधु दीजे तो
समस्त रोग जाय २८ इति समुद्र
फल कल्प संपूर्णमस्तु ॥

अथ एरंडा पाक लीष्यते एरंडी नां मी
ज सेर १ गामुमुत्र सेर ३ ते मांहे पला
लीये दीवस २ सुधी राषीने पछे मांडी
ये तार पछी गाली ये पछे गामुमु
मुत्र सेर ३ साथे तावडे चडावी ये
गोमुत्र ससे तारे उतारीये सरसी
सेर ॥ घालीये पछे कलक नाषी
ये ते कहीवेछीये हींगरष्कर २ सुंठ

टांक २ पीपेर टांक २ मरी टांक २ जव
त्री टांक २ डाउमसार टांक २ चवनीक
टांक २ सची टांक २ तेलनीक टांक २
आमलवेतस टांक २ वीडलवण
टांक ५ कांचलवण टांक ५ सिंधाल
वण टांक ५ संचल टांक ५ समुद्र
लवण टांक ५ जवषार टांक ५ नव
सादर टांक ५ सुरेषार टांक ५ सा
जीषार टांक ५ टंकणषार टांक ५

११

पीपली मुल टांक ५ अजमोद टांक ५ जीरा टांक ५ असाली यो टांक ५ हल दर टांक ५ बावडंग टांक ५ नसोत टांक ५ हरडे टांक ५ कपीलो टांक ५ सुवा सेर १ अजमो सेर १ सर्वेनाखी ने तार पछी जी बुनोरस सेर १ तेंदी बिस न्रगाल गए पर देई ये छोपडे सुकवी से पछे एरंडी वार नीपनो

तैंडी मंत्र ते होके रने ऋा सरे संवारे त
ध्यारोर सो ठेष वरा वीये तों मलगा
थ तप्या वा गोव मेहांग्नि बेंथ्रु ष
गोलोपी यो पे टवि ऋारस ईना श
पाम्रे. षाटु षाहतं जनुं : इति श्री
पेंडीषाक्स संपूर्णं ।।

अथ असालीया पाकली ष्यते
असालीयो सेर १ गाम्ह दुध सेर ६
ते मांहे उकालीये षीर करीये क ७ ए
थापुतारे छा या मांहे मुकावीये पछे
सर्व फल फलते कहीये छीये. हव
द्र पैसा र भार २. काजुजी रू पैसा
१ भार फरकडी फुला वेली पैसा १ भार
अजमोद पैसा १ भार सोहागी पैसा

१भार चीत्रा छाल पैसा १भार जौहर
पैसा १भार मोथ पैसा १भार लवंग
पैसा १भार जायफल पैसा १भार
जावेत्री पैसा १भार उटंगणा बीज
पैसा १भार केसर पैसा १भार षीरा
कानी बज पैसा १भार अकलकरो
पैसा १भार पीपर पैसा १भार मरी पै
सा १भार ए जनस सर्वे पैसा भार ने
समारे ले बी वारी अपड़े छाण करी

ये पढे तो जी येते बरा बरष्वी नी सा
ऊरवांटी औषध करना षर्वा तु रए
ऊरवुं ते षा चु रोग मात्र ने टाले र
गतपीत्त जाय विस्फोटक जाय मू
त्रकर्म नुं दरद जाय राजरोग जाय
पथरी जाय मुषदुर्गंधी जाय वा गोळो
जाय ऊने जो बेध षा तो होय ते हे
ने कांपे अजीरण रोग जाय बे हो
रोग जाय बबेसी रोग जाय

चांदी मासे मा.१

ओरं अमली मासा मा ३

थोहर को दुध मे सीकी या को

वार १४ नौ पकर कर चांदी पर छडदे १ पै

प्रात मा ३० औं खदे

सनाइ टंक दे उजन दो टंक सहत सों खाय तो हं स्त्री वश
वंत होय सकर सों खाय तो पित जाय मिश्री सों खाय
तो स्त्री सं भोग करे गाय के माखन सों खाय तो गरमी जा
य पिंड खजूर सों खाय तो छुधा लागै दाख सों खाय तो
लंबी दृष्टि होय तिल के तेल सों खाय तो सर्व विस उत
रि जाय छोटी हरड़ै सों खाय तो हृष्ट जीतै गदला
पानी सों खाय तो कान सुनै कागला भंगरा का रस
सों खाय तो दस वर्ष का जुवान होय दिन ८४ हर
डी का दूध सों खाय तो दश घोड़ा का जोर होय पश
रेहा की मिंगनी सों खाय तो मूत्र कुलास होय
अनार के रस सों खाय तो धातु बंध जाय कच
ना खाय तो वाइ दूर जाय महुवा के रस सों
खाय तो अष्ट गुन तेज होय आद के रस सो

औषधिः सुंभनस्येयम. केसर मासा ३ जाय
फल मासा ३ दालचीनी मासा ३ समुंदसं
गी मासा ३ कस्तूरी रती २ गिरीवंशम
की मासा १ गिरीविरोटकी मासा ४२ गि
री मासा २० सबलाय करड़कठी करै
बाटनी भीगुना पुराकमासा १ रतकुं
पाय बंधेजहोय।

३

नबलाई नै टाले ॥ कमला नै टालै ॥ रूई नै
टालें ॥ एरसौं रोग नै टालै इति हरडे प्रा[illegible] संपूर्ण

कीये ।। तज टांक ५ तमालपत्र टांक ५
एलची टांक ५ नागकेसर टांक ५ षेर
सार टांक ५ बरासबास १६ वंसलोचन
टांक ५ एटलां वानां ऊलं वारी कपड छा
णकरी मांहे मुकीये ।। पछे हलावी उतारी
ये ।। पछे चोपडा वासण मांघाली मुकीये ।।
पछे टांक ३ नेआसरे षवरावीये ।। तपत
आवती होय तेहेने टाले ।। जीरणज्वर
होय ते हेनेटाले ।। पीत्त ताव उध्रसनेटा
ले ।। सुकवानेटाले ।। वात पीत्तने टाले ।।

बांधीये जवसेर १ तेओपत्नीमांघालीये
पछेपाणीसेर ४० मुकीये ।। ओपत्नीमां
हेलडबडतीमुकीये ।। तलेअगनी
कीजेपछेसेर ५ पाणीरेहेतारे
उतारीये ।। पछेओपत्नीमांहेथीओठी
पाणीगलीयेकुंचाकाढीनाषीये ।। प
छेहरडेमांथाजवकाढीनाषीये ।। पछे
हरडेफोलीयेमांहेथाकलीयाकाढी
नाषीये ।। पछेपंहरडेपेलाऊकवाथना

अथ पाकुनी बीधी जरकीछे अथ हरडे

पाक लीष्यते ॥ अथ पाक की समेग्री ये ॥

ते हरडी येछीये ॥ संघा कजीटांक ५ दरषान

सेर ॥ पुक्कर मूलटांक ५ शतावरीटांक ५

धमासो टांक ५ कौंचटांक ५ बल बीज

टांक ५ अघेड़ोटांक ५ गजपीपरटांक ५ ग

लोटांक ५ कुंवरटांक ५ पाढिटांक ५ पीपली

मूलटांक ५ चीत्रा छालटांक ५ रासनाटां

क ५ एतलां वानांनो क्वाथ करीये हरडे

सेर १ सोलड़ी आणीये ॥ ते हरडेनीकों पत्नी
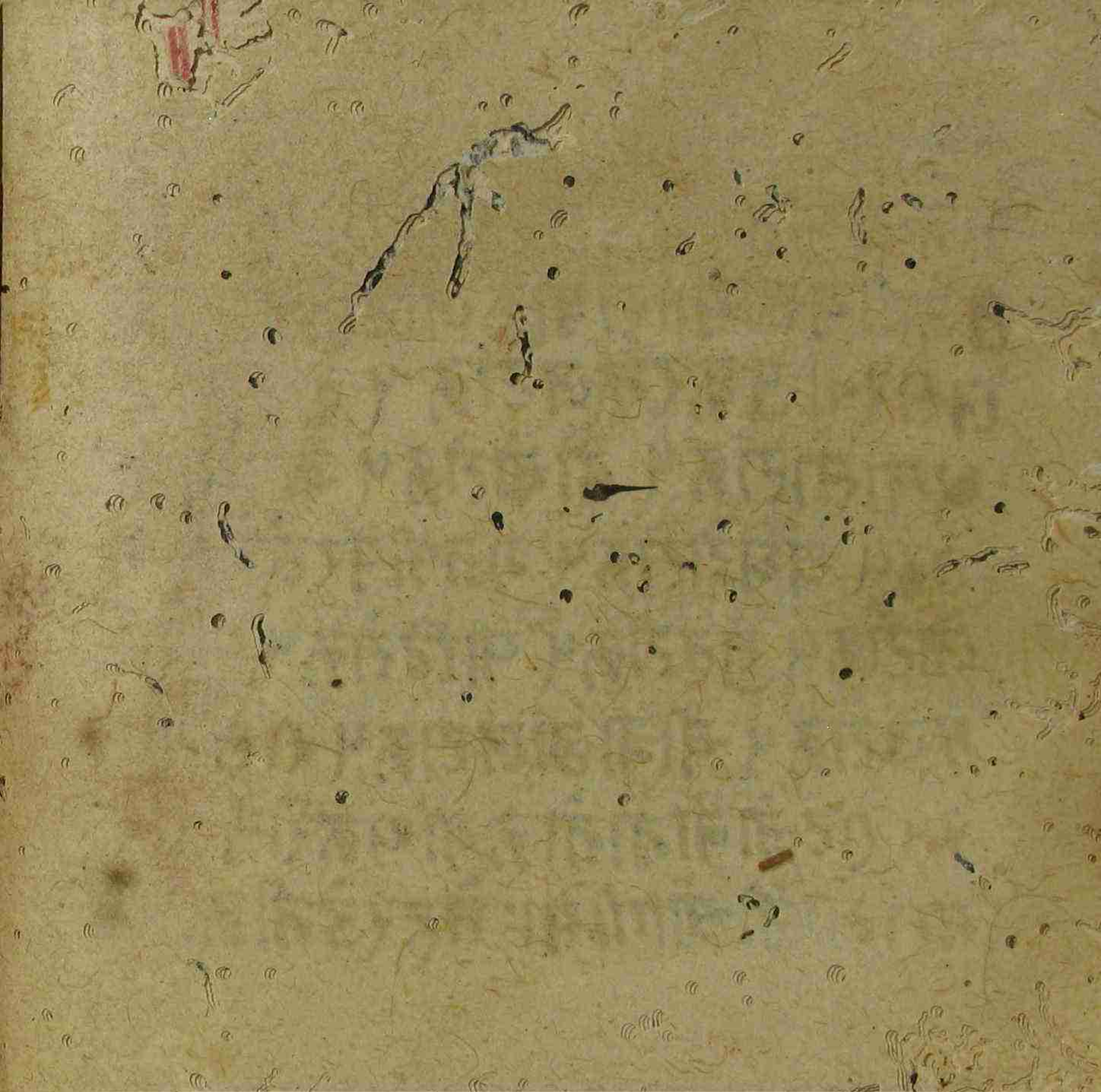
श्रीगणेशायनमः॥श्रीकृष्णायनमः॥
अथ नरसींहमेहेतानी हारमालानां
कीरतनलष्यां छे॥ ॥रागअसावरी॥
॥हरी लोककहे नरसैंओ लंपट वा
र्यती वात राज्ञाए जांणी॥ सेवकःतेड
वा मोकलो मंडली के॥ राष्या रारंगब
रद सारंगपांणी॥ टेक॥ जो मांहारे
कपट नथी रे करुणाकर॥ तो राषसो ला

हार
॥ १ ॥

जस्वामी जमाहारी ॥ सुंदरी सहितरूं
गांनकरूं सदा ॥ माहारेहरपाप्रीवता
हारी ॥ १ ॥ सोरवसरू जोवामलुसुजने
नागरलोकपारवडबोलें ॥ कीरतन
नांसुकुसांभलकमलापति ॥ जोमेव
सहितमहिशेषडोले ॥ २ ॥ तंतवीपार
सस्वछरीझांस्वरीघुघरिपाग्पझण
कारबोले ॥ नरसैयाचा स्वांमीनीघंट ॥

दाता सदा ॥ सामला समो वडकोर

नहिजंतो लेअ ॥ १ ॥ हस्ताकुंडक

पदीसंपटी काहेवां सदा ॥ पाखंडंक

पंनागरजात ॥ राग्यमंडली कमदभ

रएमओचरे ॥ सांभस्लेसर वस भाजवा

त ॥ टेक ॥ हरिराषयद्वारपांरंता अमो

छु अणछुता ॥ दांमोदर तहहरी मेवात

जांपी ॥ मोगानीमालाहुतंघातीक

नर: हार

॥२॥

री॥ बोलेमंडली कंकूर वांपा॥ ९ ॥जो
भांगीभोगलहरितुनेहारआपसे॥
तोमुजनेदोषनथीमेहेता॥आप
रवावीनानहिछुटोनागरा॥ताहारे
संबलदामोदरराये प्रीता॥ २ ॥माले
तीलकपारवंडरचेसदा॥आजपडो
जीवजंजालमांतों॥जणेमंडलीक
घरतसुपनागरा॥ श्रुं:कानेसभाए ॥३॥

मदक्षरगातो ३॥ ॥पद२॥रागगोडी॥
भाईमांहारे हरिगावांनी टेवपडी॥
म्हारा नाथ जीने नां मुकुं ये कघडी
वेधी लु मन अलगु नां रहे॥ म्हारे हरी
संभी तजडी॥टेक॥ आंखा दिवस भोरुं
रली खपी आवो॥ भाभी ये नां मुकुं पं
पीरी॥ मे जांणु ए वेरण माहारी॥ भाभी
नो हेगो रे णी रे॥ २॥ जेणे नामानु छाप.

न्हौस॰ हा
॥२॥

रु छाहा आपुं ॥ कबीरजीने अवी
चलवांणीरे ॥ एहवुजोईनेएसे भ
रंगणो ॥ मुन्हें छबीलोजीमुकसे गं
गीरे ॥ २ ॥ धन्यमुनांतट ॥ धन्पव्रं
दावन ॥ धन्पराधारुकमपीरंणीरे
धन्पनरसैआनीजी भलडी ॥ जेजपे
छबीलाजीनीवांपीरे ॥ २ ॥ कीरतन ॥
३ ॥ ताहारेकोणछे छबीलाने कोण ॥ ३ ॥

कोण छे नाथ ॥ कोणे दीधो ताहरे
मस्तकं हाथ ॥ हवा तुं विषयरसमां
फोजी रह्यो ॥ हरी मलवा नो मारग को
हो ॥ ३ ॥ लंपटपणु तुं सु की दे ॥ अण को
टपी अध्यातम ग्रहे ॥ सुद्ध वैराग्य पंथ
जो मले ॥ तो गर्भवास नो फेरो टले ॥ ४ ॥
आसर वसंन्पालि के हे छे तुन्हें ॥ पछे के
ही शंका रोन हि तुन्हे ॥ ५ ॥ श्री मक्षणे नर
सैया कां फरे ॥ पुरुं किण गयोलन तु आर्वे कुम ॥ ५ ॥

नृसिंह।
॥५॥

जे नर इछा ईश्वर गाय ॥ ते कामिनी के
रनां सुके हाथ ॥ ६ ॥ एवै स्रवत्ता कां हीं
पील ही एणी पेरे भीमे पुछु सही ॥ ७
॥ कीरतन ॥ ४ ॥ ॥ ॥ हां रे भाई
कपिपाकार जस्नु न्हे भाषी ये दी धु ॥ श्री
सावी गयो रूं वन मोझार ॥ उग्र तप व
न मांहे कीधो ॥ दयाकरी स्नु न्हे त्रिपुरा[illegible]
र ॥ टेक ॥ गोपेश्वर रे [illegible] हुं नर [illegible]या जे
मागे ते आपु तुन्हे ॥ [illegible] प्रभु जे तम ॥ ४ ॥

नेबाहांसुं॥ कृपाकरि तेआपोमुन्हे॥२॥
बोली चक्रवतसुंएंथया॥ ततक्षण
अ वीग्रहोहाथ॥ सोलसहस्त्रगोपीसं
गरमतां रांसरे षाड़ोजांहां वैकुंवना
थ॥२॥ श्रीवृषभांनसुतानंदलाल॥ स
खिसमांणीसरूएसाथ॥ परमदयाल
कृपालवरसुंदर॥ दीपधराव्योमाहारे
हाथ॥ ३ हेतकरीमुन्हेदेखादीधी॥ मा
हारोकृपा [illegible] षमी [illegible]तार॥ नर

मांन

न्रसिंह ॥५॥

सेयातुंली लागाजे॥ जेकी धी कला अवतार॥४॥ कीरतन॥५॥ ॥आगे कलीजुगनालोकविषई॥ तेमांहे जाग रातुंविषयागाय॥ कलेकी धुंतेआप णकमकीजे॥ तेप्रभु मोटा वैकुं ठराये टेक॥ कलेजोनेंगोवरधनधरियो॥ ते आपणेंकमधराय॥ कलेजोनेकाली नागनाथ्यो॥ तेआपणेकमसधाए॥ २ कलेजोनेदवानलपीधो॥ तेआपणे

॥५॥

कमपीचाए॥ कलेजलमांपरं वत ता

रं। तेआपणेकमं तराए॥ ५॥ थासंन्या

सीजईरहेकाची॥ भलोहोयतोनीगु

पाग्रहे॥ सीम भणेकांस्तु लोनर सैंया

ओंभमी विनेमुषरांमजी कंहे॥ ३॥ ॥

कीर्त्तन॥ ६॥ ॥ हारेभाईगंरढाथैंसें

त्यारेरांमजी कहीस्यु॥ ह वडांकल्यानो

माहंरेरवपनथी॥ छेलछंबीलोने

ढोगाल। मा हारेंगोवालीयामांगेकु

नृसिंह ॥ ६ ॥

लपती ॥ टेक ॥ हलाधडमु की नेडा रे
कोणवलगे ॥ कुरमु की ने कुकस कोण
खाए ॥ रंगीला छबीला छोगाला ने
मुंकी ॥ ताहारा राम भगवांनीया ने कोण
गाय ॥ १ ॥ मांहारे कृस्नजी मात तने कृस्न
जी तात ॥ सगां सहोदर कृस्नजी सहाए
कोए मुन्हे नंदो कोए मुन्हे वंदो ॥ मेस्री
कृस्नजी मुं का कामजाए ॥ २ ॥ सनकस
नंदन मुनीजन वंदन ॥ ते त्र कोरमाह रे

ह्दे रहे ।। गीरिवरधारी कुंजबिहारी
भक्तवछल बीरदवी रुत्ववहे ।।२ म
रण अलसदा हितकारी ।। दोहखुंस
सतणुन वासेहें ।। म्णेनरसै यो सांभ
लधुरमीमडा ।। तुंगर्जे नाकरिहुरवे
हुसजी केहे ।।४ ।। कीर्तन ।।७।। ।। राग
रामेरी ।। जुयोरे रामजी नें नंदे नागरो
एहंने अध्यातम यहाना आघरो ।। टेक
।। रामजी बीन ।। कोण भवजल तारे तुं

नृसिंः हा
॥७॥

जोनेमन्नविचारीरे॥चरणरजनापस
एथकीजोनीउद्धरीगौतमनारीरे॥२
सागरमांहेजेणेशस्पातारी॥धीमर
नेवैकुंठआपुरे॥चिरंजीवविभीष
पाकीधोरावणनुकुलउथ्थापुरे॥३
रामजीनेजांणेशंकरजेहेवा॥जेतार
कमंत्रनुहारदलहेरे॥भणेभीमका
भुलोनरसेया॥तुंगजनाकरिनेमुष
रामजीकहेरे॥४॥कीर्तन॥८॥हल्वातुं

रेहेरे वेझी रामदासीया ॥ तेतो देखीए
मंडपाव्रीया ॥ टेक ॥ हस्नारामजी नासेव
कहो येसमहुषी ॥ तेकोहेने कहे कोरमा
तुरे ॥ रांम छुलमांहे अंतरसांनो ॥ एज्ञान
ताहारूं सरवे नातुरे ॥ १ ॥ हस्नासरपाब्रम
छु बीनोमाहारो ॥ जेणेंगोकुळमांहा ॥
गोचारीरे ॥ ब्रम्हाइंद्र नारद ऊंताशन ॥ दे
वगवास वहारीरे ॥ २ ॥ जेणे कंसकुळनि
कंदन कीधु ॥ छेदंराजणना देवारीझरे

हार॰ नृ॰५

॥ ८ ॥

राज्यविभीषणउग्रसेन थाप्यो॥ ये आ
द्य अंत जगदीश्वरे॥ ३॥ वेरागी पणे राम
जी मल्ले नहि ज्यांहां लगी नां आवे वि
वेक रे॥ भुरषी मडाए म कहे नरसैंयो॥
राम कुसबे ऊएकरे॥ ४॥ कीर्त्तन॥ १॥
राग काल्हेरो॥ नरसिंहा श्रम कहे संन्या
सी॥ पंचाग्नाासटम समे की धी कां श्री
आतम अभ्यासी रूं थयो॥ तो हे नांम
ल्या मुजने अवीनास॥ टेक॥ बोल्ले तेर

८

षटमासरूं प्रयागमांनाख्यो॥संवा
सोमपुंरंजीसेतुरें॥तोहेमेस्वपंनेह
रिनव्यदीगा॥तोतुन्हे दरशनकेहेतुरे॥१
सतषटमासनीमीषारणसेतु॥पुहू
करस्योपंचासरे॥केदारगढकामरू
च्छमीभमीआंव्यो॥तोहे नांमस्याअवी
नाशरे॥श॥हवडांसरवडफरासंन्यासी
यांसेताहारीपततोजाशेषरी॥नर
सिंहाश्रमकहे सैंया॥बेशीरेहेशेत

हारो हरी ॥ ३ ॥ कीर्तन ॥ १० ॥ हलातुं रे
हेरे भगुआलवंलवकरतो ॥ वारूछुं
आंहांथोउठीजा ॥ व्रथावचनताहारूं
नहिचाले ॥ तुं टाढीबोलीनेभागरषा
टेक ॥ हलावैलवंनांभोगतेनथीदीठा ॥ वैर
त्ये दाढाउषनावेठरे ॥ भावेयेटला
षाविणीविणीएपेंनावडनाटेटौरे
जोतुंहेतवांछेपोताजु ॥ तोसुंदरश्याम
छबीलोगा ॥ भगोतंसैयांसांभलजो ॥ १ ॥

नरसै हा
॥२०॥

या रेहे वादे ताहारे ऐसुंदर श्यांम ॥२॥ कीर्तन ॥१२॥ वटलो नागर नरसैयो जेणे बोटु आ हिरडा नुषा धुरे ॥ अवर रस रु ढोली ढोली दीधो ॥ प्रेमरसायण प्याधुरे ॥ टेक ॥ ब्रह्मा उमा वेद वषाणे लागी जोगेश्वर ताली रे ॥ शुकादीक नेसपने नां आवे ॥ ते रासरमे वनमाली रे ॥१॥ दुहाला जीने षांध्य कामली हाथ लाकुडी गोधेन चरावा जाये रे ॥ नरसैया नागर नेसाथे ते झीनेमां कै साढी नेषाये रे ॥२॥ २०

कीर्त्तन ॥ २३ ॥ जो ब्राह्मण तो वैस्नवक
हंग ॥ वैस्नव तो सुब्राह्मण नांम ॥ माला
तीलक पाषंड रची ने ॥ तेवण साडुस्ना
कु गांम ॥ टेक ॥ थर तपणे त्पे सरवधुता
कु स्रोरगमांस कू वैस्नवकीधा ॥ नटयां
नी पेरे करि ने नागर श्री दामो दरने दी
डुस्न पदी धुरे ॥ १ ॥ पाखंडे पेट भरा
वं रूपे रे ॥ आजमंडली केसाहो हा
थ ॥ कणे भीम लो छुटो नरसैया ॥ जो
गरजना करी ने कोसे रघुनाथ ॥ २ ॥

नरःहा
॥२१॥

कीर्त्तन॥२४॥ अदेषाल्पो कते अटक
ल बोले॥ वाहाल्पाजी नो मरम नां जा
पो जायेरे॥ जेहनु चित्त जेस्युं वाधु॥ ते
हने तेह विना क्षण नां रेहेवायरे॥ टेक
बीजा परहरथ सरव कोजांणे॥ प्रीतभ
ली मनमांहेरे॥ स्नेही पुरुषनु कारण
मोटु॥ तेहनी आंषडी अलगी जणायै
रे॥ १ सामलीयो माहारे हदे समांणो॥ ते
नु वंडाल्पो कां मुंजांणोरे॥ क्षणे न रसै रसो
सां भरपुर भीं [illegible] तु फोक टसां ने तां णेरे॥

कीर्त्तन॥२५॥ ॥राग असावरी॥ गोविंदास भक कहे नरसैया॥ अमो शीतश्रीछीताहारीरे॥ महावायक उपदेश वीना तु नेनहि मले देव मुरारीरे॥ टेक॥ श्रीपात थई मे सर्वस्व मुकु अष्टांगजोग मे साधोरे॥ अमो दंड कमंडलना धारी॥ तमो मालाधारी क्यम बाधारे॥ मेहेताजी नाचे कुंदे ने ताल वजाडे॥ परमपद न व्य जहीयेरे॥ उदरभर वा पाषंड करवा॥ वस्तीलो कने अंदेषाक हि...॥ मेहेताजीस्य

जै० हाद
॥२२॥

लासु की ने संन्यासी थायो ॥ अमो आपु
अं कार रे ॥ गो विंद भ्रम कहे नरसैया
मागो पण नावे नहि आपे हार रे ॥ ३ ॥
कीर्तन ॥ २६ ॥ ॥ राग मारू ॥ श्री पातने
सिंसि नां हो पेरं ॥ वैस्न वची नातरो नां
कोय रे ॥ टेक ॥ को हो जी को हो संन्यासी
शरण जषांम्यो दंड वेष जटाधारी रे ॥
तमो वैस्नव नी नंदा करो भुंडा ओ नरक
ना अंधी कारी रे ॥ १ ॥ तमारी अस्त्री मरे
तेषा वाटरूने तपारे तमो मो नयु जांम्ये हरो रे

॥२२॥

प्रीतभक्तिवैराग्यप विनाप्रभुकोकोन
जवेहेरोरे ॥४॥ तमाराॐकारनुकरो
अथाणुं ॥ माहारे ब्रंदावनचाल्योरे ॥ प्र
पोनरसैयोमेहे लोदंडकमंडलमाहा
रीपुंगेतालवजाडोरे ॥५॥ कीर्तन ॥७०॥
मेहेल्यमां ॥ वांकीवांणीरेमेहेंताताहारे
वांकीवांणीरे ॥ ॐकारपिनेतालवषा
णीरे ॥ टेक ॥ हलांतुरंगकेरी कराकी
रतनकरां ॥ वलीकोटहलांबारे उत्पा
तवातभरवंश्रीप [illegible] ॥ तेहनेतुंचा

लाजीना ॥ आस्तुसमझेगोसांई रे

वृंदावनमां कसछेवीजे ॥ दीधुगोपी

आंने सांई रे ॥ १ ॥ नरसैयोहरषिनेहरि

गुणगासे एपीमडोरीसेमरसेरे ॥ आ

पणवेऊनेवादमंडाणो ॥ नांजाणीये

कोतरसेरे ॥ २ ॥ हरिरसनोस्वादशंकर

जांणे ॥ वलीगोपियेलीधो छेमागीरे

मारकस नकादिकसुकजांणे ॥ त्याहां

नरसैयोनागरदिपागीरे ॥ ३ ॥ कीर्तन

॥ १२ ॥ राग आसावरी ॥ नैसलवंदीनातमे

नर:हा
॥२५॥

नथीपांमतु ॥ अकलसरूपभगवांनरे
समरांदर्शनकांहाथी आपे वीना आ
तमज्ञांनरे ॥ टेक ॥ विरागसुनकादिकभो
गवे ध्रूवअंमरीषप्रल्हादरे ॥ तेहेवीस्वा
तप्याहारी कांहांथीनागरा ॥ तेमिथ्याक
रवोवादरे ॥ २ ॥ वैराग्यजोनीहवो ॥ तेपाम्यो
देवमोरारीरे ॥ ताहारिपिरे कोणगासो
उघाडोसणगाररे ॥ लंपटपणो तुं [illegible] न
हीपामां ॥ राढंमी [illegible] लागीरे ॥ सहचर
नंदस्वामीजी कहेछे नरसेयारे [illegible] ॥

रागीरे॥३॥कीर्त्तन॥२०॥ हांरेभाईमुंड
मुंडाविनेटोपिघालेे॥अमोनथईये
वैरागीरे॥अमोवैसवछुछेलछबिला
ना॥माहारेहरिशुतांलोलागीरे॥टेक
अहंममताभागीतेवैरागी॥जेहनीअंत
हरसिंगीबोलेरे॥वेषधरिनेवेषकरेते
वैरागीअसुरनेतोलेरे॥१॥अमोसंसारवे
हेवारसरवेसावविये॥विकारथीवेग
ळारहियेरे॥सरवचंतरसमहयलेख

मू॰ वा॰
॥१५॥

वीए॥ तेहने वैस्नवकहीयेरे॥४॥ अभी मांने तम्योसुकृतषोहूं तेथी तरंगनथी लागोरे॥ भणे नरसैंयो विरागमुको नेपहेरेभ्यांच वस्त्रनो वागोरे॥५॥ कीर्तन॥ रागसोरठ॥ रेहरेंगेहेलाजागरण येवडो न कीजेवादरे॥ वैस्नवनामकेहे वरावीये तोवढवानोंस्नोसंवादरे॥ टेक॥ हरिअनेबकवुकस्तु॥ जेलषमीवरमांलीनंरे पाँनमुषेपंचवेस्नवतजीने संभरेनेद

॥१५॥

कोपीनरो॥३॥सुकदेव व्यासउवास्ता
सरषा॥करताभगुआनो अंगीकारे
नट आनी परे नागरा तुं करे छे सणगार
रे॥४॥कम्ल स्वामी सरवेनो छे॥वली भगत
जनंनो विसरामरे॥माधव आश्रमकंहे
नरसैया॥नथी भीन्न के सवंने रामरी॥३॥
॥कीर्त्तन॥२२॥रागसिंधुडो कडषा॥ ॥
कोपाग कोरने विनत्रु वी ठरना॥कमला
नांथ मन स्तु विचारो॥द्रुपदी लाज नेका
ज उगारी हरि॥दुषसमे हवां दास तांहारो॥

॥२६॥

टेक ॥ प्रगटथायेनामभ्र्तलमांभुधरा
जेनरसैयानाथएहवुबरदकाहावो ॥
सेवकसंकटटालीयेत्रिकमा तमोना
थभ्रलाजकाहावो ॥१॥ लोकदेषिसरू क
उतंगकरेबूंऊं मंडलीकमद्भ्रक्रुरबो
ले ॥ नरसिंहाचास्वांमीहृदयेक आपी ए
जोगीयांचा बलशांतह्रोये ॥२॥ कीर्तन ॥
॥२३॥ ॥रागमारू॥ हरितुन्हेहारनहुआं
पेरे ॥ हरितुन्हेहारनहिआपेरे ॥ तुन्हेसं
न्यासीज्ञानदेरे ॥ टेक ॥ हसापुरा [illegible]

सुणोभमरे॥जीवजंजालेवाह्योरे॥घणा
दिवसछांनोरंभचलावो॥आजतुम्हेकं
हेसाह्योरे॥१॥प्रीतपरब्रलपरमेश्वरनी
रख्योविश्वासकाशीरे॥तेसाथेताहारेमैत्री
कशीरेरषेवाहिजांलोभांशीरे॥२॥तुरम
नीनिंद्राकरेरे॥गेहेसागरवजराषेरे॥
भीमभणेताहारजउं॥जोसुखरामजी
राषेरे॥३॥कीर्तन॥२४॥हसासुन्हेप्रा
पनांलागेरे॥हासोडअक्षआगेरे॥टे
[illegible]सेएअमरीषसाथेहठकरो॥रांदु

॥७॥

ओथ ई नेगा गेरे ॥ भगत हेत सुदरश
न मुकु ॥ केहे वो रुषि जी ना गेरे ॥ ४ ॥ फरी
रुषी जी त्यां हांश्चरण ज आव्यो ॥ हरि ज
न मोटा की धारे ॥ अमरीष कारण कृष्ण
जी ए ॥ दशावार जनम ली धारे ॥ ५ ॥ राजा मं
डलीक गेहे लोथयो ॥ सिध जोगी नां ज
पेरे ॥ नरसैयो केहे निरफल नां जारे
मेहे लवषाणो रे ॥ ६ ॥ कीर्तन ॥ २५ ॥ हे
लैभ्तुंके हारं विचारे जडशो रे ह लातुं
हारं विचारे जडशो रे ॥ रु ला तु [illegible]

पडशेरे ॥टेक॥ हलांतुपाघडी बांधे
खुणाली॥झीणाज्यांमापट कारे॥अ
ल्लीसाहासु जोई आंखमन चावे वल्ली
करेहायनाल टकारे॥१॥ हलानगरलो
कतुन्हेमोहिरह्या॥तुंलंपटवेषदंभधा
रारे॥कीहेरे कंवे बांहधरीने॥कमनचा
वीपरनारिरे॥२॥हेलांहारमगावोमेहे
ताजी॥क्यांहांछेदेवमोरारीरे॥मंडुली
कंकहेबेघडीनुसाह्व॥फुछेनांषिस
मजोरे॥३॥कीर्त्तन॥२८॥रागपरजीयो॥

॥१८॥

रूं तो त्याहारे भरोसे वळुधोरे ॥ माहा
रा सांमळीया सांथे छु सुधोरे ॥ टेक
मंडळी कमुजनेमारस्सेरे ॥ त्यारे तमो गो
कुळमांकयमरेहे वासेरे ॥ माहारे तो वां
र जांननथीरे ॥ ताहारु भगतवछलब
रदजाशोरे ॥ १ ॥ प्रल्हादथी हिरणपकश्यप
पहारो ॥ अंबरीषथी दुर्वासारे ॥ येक [illegible]
रमंडळी कंथी नरसैयाथी मंडळी कहा
रे ॥ ताहारि सुं ल्हे छे आसरे ॥ २ ॥ संन्यासी
वैरागी विसमुखो ले ॥ एघण [illegible] करे ॥ ३ ॥

णेनरसैयोहार आपोमाहाएवाहा
ला॥माहारेहावुम लोछेछे करे॥४॥की
र्तन॥१३॥ ॥रागसामेरी॥ रेहेरेगुपा वं
ताना गरा॥हरिसुं नकी जी एवादरे॥हवे
हार आपेनहि॥ते सुख तषोऊं सर वेरे
टेक॥हवेदानवपर वी पांमी॥तेरहेंथोडो
कालरे॥तप वलेवर दांन आपेप छेउ
थापेगोपालरे॥१॥हिरण्पाकश्यप रा
वणहवीगया॥वली गयो लेडुयोधनरे
अंक कंसरूपसु अटककसी तुमार

॥ १८ ॥

नीममतामन्नरे ॥४॥ कामवाहालोजी
लजकारापेताहारी ॥ तेंहरिभजाप्रमल
मरे ॥ अटपटीगतगोपालजीनी एमकहे
अदभुतआश्रमरे ॥२॥ कीर्तन ॥ २८ ॥
रागसिंधुड़ोकेडषा ॥ हरितमोदयासींन
ऊंदीनदामोदरा ॥ तुंओदिनानाथहुदेवि
चारी ॥ चरणनेशरणआव्योकृपानाथ
जी ॥ करोगोपालसंभालमाहारी ॥ टेक ॥
देवनादेवतुंदेवकीबालका ॥ भगतपा
लकएहछुसरदताहारे ॥ एहनुंजांभोजे

घटेतेकीजीयेत्रिकमा॥अवरपुरुष
कोनहिजमाहारे॥१॥भामकीनामेतमो
तनतारी तमोविनाकोणउगारेमोरार
उएभावेतमोपुतमातारि॥जमहतना
तमोसंगनिवारी॥२॥क्रोमाहाराकरमने
भारसोपुहरं तोपतितपावनताहारू
बरदजासे॥छोडतांनहिछुटोरेसरणां
गता॥छांडसोतोडपहासथाइ॥३॥दुष
दानांतमोअंबरीपूरीयां॥४॥थापियो
ध्रुवअवीचलआगे॥एरहुजांपीने

नरसैयोनांमताहारुजपे राषमचरणे रषेलाजलागे ४ ॥ किर्त्तन ॥ २९ ॥ राग सामेरी ॥ गरवनांकी जेगेहे लडा ॥ सुंगर वेग्यांनगमाओरे ॥ सुकृतत्नज्ञाषोहि हवडे ॥ आविनस्रुंकामकमायोरे ॥ टेक ॥ नेत्रछतां अंधसुंथयो ॥ जोनेंमनसुंवि चारिरे ॥ मोटुंकारणमायातणुमुक्यारा मविसारि ॥ १ ॥ श्वांनेअरथेअहांआवियो आविनेकामसुंकीधुं ॥ अमृतरससुंकी नेसुंहलाहलपीधुं ॥ २ ॥ अणचितवुंबो

१२०

लियेनहि॥ हदेस्युंथंयुछै स्युन्प॥ अविं
त्प आश्रम एमकहे करोमेहेताजीमुं
न्प॥२॥ कीर्त्तन॥ ३०॥ रागु सिंधुडो कडष॥
पेक अवनी धरा॥ देवदामोदर कंहुगु
पातोरडा कवणवांणी॥ शंकरसारद ना
रदनिगमहरि॥ अविगतगंत कयमंजाये
जांणी॥ टेक॥ विष्णुपालकतुंसाथकरू
माहरी॥ टाल्पफेरागर्भवासकेरा॥ दार
पांदेग्रीहरि दासजांणी केरी आंनंस
मरथकोनहि अनेरा॥ १॥ सगुणसारस

सुंदरसुमत सार

॥२४॥

धरसुंदरसुभमंती॥ विनतिजुगपति
सुणोरेस्वांमी॥ संसारपारउतारोकम
लापति गोविंदगोपालगरूडगांमी॥ ४॥
नंदनानंदमुकुंदमुरलीधरा गोकुल
चंदगोविंदगोपाल॥ सारकरमाहारी
दीनजांणीकरि॥ नरसैयोरंकतारूंजबा
ल॥२॥ कीर्त्तन॥ ७३॥ श्रीरघुनंदनतिमं
दहूंमांनवी॥ एहवीदांनवीबुधछो
जरेवा॥ मनना स्वादनेवादकरिबोलि
येभोलीयेरांमजीतोरिझवा॥ टेक॥ अं॥ २९॥

त्व अविनाशप्रकाशबुधिकीजीए
दीजीयेदरसनरांमरूडा॥ ताहारामां
मनोहढविस्वासआव्योनथी तेनरो॥
भवजलमध्यबुडा॥ ५॥ अमरीषविप्री
षणपरमविचक्षण॥ अंबरीसुतबुल
सीजरास॥ भीमभणेतेषोरामभोल
गा॥ वामीयोतेमानागभवास २॥ की
र्तन॥ ७४॥ ॥ भगतवारीएतुहस्तका
हावांसए॥ आजमामभुकीकारेनत
नाजकाला॥ हंहबैभवसदामांने॥

नर. हुस

आपीयो॥आजकुपणथयोकांरे
वा॥हाला॥टेक॥हरिमाहारेह्याथीयो
जेणेकालीनागनाथियो॥अघउतर
डीयोदांणघाटे॥तेबलताहारूकां
हांजमुंनाथेजी॥नाशीगयोमुंमंडली
कसाटे॥॥नरकासुरमुमुपालजरासं
धतेजीतीओ॥अनंतजोधानातेबंधछो
ड्या॥प्रलंबबगासुरतरणतेंताडिया
केशीकंसनातेकंठमोड्या॥॥आवेकुभा
वेजेणेतुंउपासीयो॥तेजकवीगभवां

सनां आवेवलतो ॥ फणेनरसैयत्तरेह

तुंमाधवा ॥ राष्मराष्म बालकनेबापवे

लतो ॥ २ ॥ कीर्त्तन ॥ ३३ ॥ ॥ रागमारु ॥ ॥

मेहेताजी रांमनुलीजेनांम तेणेभवछु

टीयेरे ॥ येकलथी नहिसरेकाम सिघ्या

तालकुटीयेरे ॥ टेक ॥ नीर्मलनांमरामैया

जीनु ॥ पीतांपातग जायेरे ॥ रामजीनुनांमनां

मदेवेलीधु ॥ तोमोरेजीवाडीगायरे ॥ १ ॥

राजीवलोचनहस्ताहलंमोचनदीनो

॥२३॥

नां दयालरे॥ रामजी नेमुकी ग्रहीरह्या छो गोविंद गोपालतेडालरे॥२॥स्वामी अंतरयामी जेहने नामे भवजलनिस्तारेरे॥ रघुनाथ आश्रम कहे नरसैयां मागे राम जी पासे हाररे॥३॥कीर्त्तन॥२४॥ ॥ताहारो रे हेवादे मगु आराम॥ ते हनु मरती वेलां छे काम॥ अमोनव्य मानीये रे॥टेक॥ ज्यारे केश पलाये ने नि रंग लाये॥ ज्यारे श्रवणे सांभलता रहियेरे

लखुतावाघेम्वांननीपेरे॥स्यारेताहांरा
रांमजीनेकहियेरे॥१॥हस्यातुंजनमनो
जोगीकुटुंबवियोगीषोहिवेगेधणी॥
न्यांणीरे॥रंगीलोछैबिस्वोछोगालोगे
वालो॥तेनरसैपानागरनीवांणीरे॥२॥
॥कीर्तन॥७२॥हांरेहेलोंहारमगाव्यरे
नागरतुंहेलांहारमगाव्यरे॥ताहारेस
कजीयोसुतोजगाव्यरे॥टेक॥क्रोधिय
लंबबोलेपरधांन॥मेहेताजीउतारोअ
मं॥१॥वाहकरंतांथर्इखडीवार॥लंपट

रा॰ का॰
॥२८॥

नागरनां आव्योहार॥४॥तुं संत थयो तु
ल्हेसरू कोनसे॥तुं परनारिस्युं रंगेरमे॥३
वैस्लवथई वणसाडुगां म्हावेनथीना
गनुकाम॥५॥आजमंडली कको प्योमे
हेरंग॥पा॥मां थयम्हेसु आव्युं निवणि॥६॥लो
कहसार थह वडाथई॥७॥लंपट नागर
ताहारो जसजसे॥८॥भलं वधाघानकरे
बहूरीस॥वाहा णुवाहोत्पारे छेर सेसी
स॥७॥कीर्तन॥३६॥॥रागकाफी॥साम
लीयां स्युं स्युं तो सो ईलांणी॥मेतो ताहारी

नरसैयानेहारआपतां।तुन्हेकीहोचढ
सेपाडुरे॥४॥ताहाराबसुदेवनंदतोमोते
मुआछे।तुजउपरवाक्रोधरे।भणेनर
सैयोवाहांपणबाछो जाग्यजाग्यमाहारा
ज्यादवाजोरूरो॥५॥कीर्तन॥७॥ ॥ताहा
रेवेरेसुतोरेसामलीयो।ताहारेवेरेसुतो
टेक।ज्यांहांविषेत्यांहांविस्नुनहिरे एम
बोलेवेदपुरांणरे।रामतपजीजेणेदिय
यगायो।तेपुरुषस्वकोपावांपारे॥१॥
सनकादिकसंकरनारदसुक

नकसुजातरे ॥ गोरषदत्तवसिष्टगाया

तेनिर्मलश्री रघुनाथरो ॥ नारायणने

निध्यानप्पोरे ॥ नरसैयाकरूपविचारर

प्रसादरूपि ॥ कहेतपारे हरिसुता ज्यारे

तेगायोसप्पगारर ॥ ७ ॥ कीर्तन ॥ ७८ ॥

राग सिंधुडोकडषा ॥ देवाभक्ति वाहाली

तुम्हे भक्तिवाहाली ॥ वैकुंठथी भूमि

आव्यारे चाली ॥ अखिलसरूप तोहा

रूदे वनेदुग्रविभ गोपियांचेगत्नेबाल

धारली॥ टेक॥ देवाश्री मुखे कहो जेऊं
भक्त नो आधीन छु माहारा दासने श्री
पानी पेरे राषु॥ सर वने सार करे तुइ जह
लजी॥ आज माहारू कर्म श्रुथयु छे वसु
॥ मट की मटकी जशोदा घेरऊपनो॥
कंस कुल नाशना ग्योजे काली॥ जगत
हेत अमरी षंडगारियो अवतार लीधा
तेंवाली वाली॥ षंभमां हे वशातमो
भक्त ने कारणे॥ दास भल्ला इने अभे ।

॥ ३८ ॥

॥ २८ ॥

दांनदा धु ॥ नरसैया च्या स्वांमी भग
तवछलसदा हारनेकां तेअसुरकी
धु ॥३॥ कीर्तन ॥ ७२ ॥ रागसांमेरी ॥
हरली धेअरघनांथाये ॥ गेहेलाह
रली धेअरघनांथाये ॥ आगमा
सबापैयाटलवलो ॥ पणमेघपांण
नांपायेरे ॥ टेक ॥ साचिसेवाविना
रामभलेनमहि षोटी तमारी प्रीतरे

आफणीयेहरिहारआपञो॥जोहोय
जोगसंधानंनीरितरे॥१॥वायुनुरोधन
शरिरनुशोधन॥घटघटमांहरिनिरषो
रे॥भरनमारथी केहेनरसैया॥तुंजो
गीथाअमसरषोरे॥२॥कीर्त्तन॥४०॥
॥रागमारु॥हवाअमोभोगीरेअमो
भोगीरे॥ जेहनुशरणपापहसेतेथा
सेजनमनोजोगीरे॥टेक॥जटावधारे

जुगदीसमलेतो॥ वडवैकुंठचालेरे
डंडधरेदीनोना थमलेतो अंधल
कुटीयाझालेरे॥१॥ भसमचोले भग
वांनमलेतो घरछारमांलेटेरे॥ डंडव
तकरेदीनोना थमलेतो॥ सरपभोम
ने फेटेरे॥२॥ जंगोटा क छोटा कंथागो
दडीओ शंखसिंगी फुकोरे॥ भणेन
रसैयोमी तनजाणोहरीनी तोमिथ्या
वटवुमुकोरे॥३॥ कीर्तन॥ ५॥ रातरही

थोडीरे॥ नागरारातरही थोडीरे॥ सने
हदीगेताहारासांमळीयानो॥ तुंसेनां
आव्योथोडीरे॥टेक॥ सोरगसऊको
जोई समल्यो कोंईअंऊथयां॥ सेधोरे॥ ह
जीआव्योतुन्हेहारंतणु॥ छे॥ कोणेग
हेलोकोधोरे॥१॥ पागपलागपसरव
सीपातांने॥ मुकमालाउतारीरे॥
तोमतुंघऊीउगरो नरसैया॥ एम
कहेश्रीअरबलचारीरे॥२॥ कीर्तन॥ ४२॥

री ह्रगेतालवजाडोरे ॥ झणेनरसैयो

जोगधरिने ॥ कां मानव जनम वणसा

डोरे ३ ॥ कीर्तन ॥ ४३ ॥ ॥ मालामनना

राषोरे मेडे ताजी मालाम नजी राषोरे

तुलसी काष्टमां भारघणो छे गलेथांगु

छलांकाढीनांषोरे ॥ टेक ॥ जस तीलक

धरेललाटपर मन आनंदपमाडोरे ॥

सोहंब्रह्म ने वेगगायो ॥ अनहदताल

वजाडोरे ॥ १ ॥ आत्मविचारनिना अर्थप २१ ॥

रेनाह ॥ तुलसीजन लंबो रामरे ॥ विश्वेश्वर
आश्रम कहे नर सैया ॥ क्षुदानुन यी का
मरे ॥ ४ ॥ कीरतन ॥ ४४ ॥ ॥ वैश्नव पाणी
मां भार जोगीडा छे घणा रे ॥ मन मांहे
टोह पुरी नु नाम जे होये गुंग गोरे ॥ टेक ॥
अमो बीर ला वैश्नव जन ॥ भगट हरिगुण
गाई ये रे ॥ अमो पी जीये हरिरस पान ॥
सां हामां ने पाईये रे ॥ १ ॥ हूला चोरी नो
छे माल जे षुणो का जी रहे ॥ अमो नाहीं

कीजेकीत्त्वन ॥ लज्जा तजी एरे ॥ २ ॥ आ
गलनीसरक्रुसरी आंण ॥ षरे षौंषा
री एरें ॥ नास्पकुललो काचार ॥ स्वर व
री सं रियेरें ॥ ३ ॥ नयी जो आ व्यापीक
लास ॥ आंष्पकटकारीएरे ॥ नयी लागी
तुन्हेस्त्रीपातप्रेमकटारी योरे ॥ ४ ॥ लट
कालो छबीलो नाथ ॥ रंग स्वरभणी येरें
न ॥ तेरयोकहे मंडब्की कंरायने त्रणा वंत
भणी येरें ॥ ५ ॥ कीत्त्वन ॥ ५२ ॥ रागमेवा ॥ ३० ॥

राजाकोप्पो आंष्प चढावीरे ॥ वातक
रंतांरे वा तथरंगादीरे ॥ टेक ॥ षडग
काढीनेरेकोप्पो भूपालरे ॥ कोप चढी
यो बोलेमुख आदरे ॥ ॥ तांजां
रे राजपमांराणीरे ॥ सभामध्य आव्यांरे
बोलेमुखवांणीरे ॥ रीसनांकी जेरे पु
त्र विचारीएरें ॥ जगतने ब्रालण ॥ तेहने
कयममारीएरें ॥ ३ ॥ मरम नां जांणेरे वेदन
पंथनोरे ॥ नेरसै सोवाहा — रोषाकें

नरसिं॰ ३१

॥३१॥

हरिजनपीडतारे घणुपीडाए हरी
मेहेताजीनेमनावोरे ॥ कुयरबीनती
करी ॥ ५ ॥ मंडलीकबोलोरे ॥ हमुकुं
नहीं ॥ भगत जोउरे रजनीथोडीरही ॥ ६ ॥
हरीजनसाथेरे होडकीजैनहि ॥ हरिज
नसमोवड कोआवेनहि ॥ ७ ॥ कीर्त
न ॥ ४६ ॥ ॥राग सिंधुडो कडषा॥ देवा
हंमचोंबारकयमबैदलभाईला ॥ तुम
नमुजनो कयम नासरीगईला ॥ टेक

॥३१॥

ध्रुव अमरीष प्रह्लाद विभीषण ॥ ना
मा च्यांहा थ तुम दुधपेईला ॥ टेक ॥ अ
सुरमांहे कबीर ते ओधारो नामा नु लाप
रु आप्यु छाह्यो ॥ जय देव ने परमावती
आपी रषे नागरनें जातो वाही ॥ ॥ अमो
षस्र भक्त तां तमो षस्र भक्त सो ॥ गोकु
लमां रहि काम सकवो ॥ तमो राधिका
में संग व्रदावन रमतां ॥ अमो वीना विनो
द ते काम करणो ॥ ४ ॥ जो रणजा संडली

रति ह
॥३२॥

कमुजनेमारसो॥ तोचपटीएकधूल
भी जाईजाओ॥ कीर्त्तनकर तां कहेवो
नरसैयोमारीयो॥ भगतवछल ताहा
रु बरइजाऊं ॥ कीर्त्तन ॥ ४७ ॥ ॥रागम
रु ॥ मुकोवी धीवा तंमेहे ताजी मुको वी
धीवात॥ कश्यपसुत उदयाचलउद
यो हवडां थयोपर भात॥ टेक॥ नरसैक
री करि चरण ज्यां ताळ वजाडी
हाथरे ... स्वर थयो जाडो ॥३२॥

नां आव्योगगेकुलनेनाथरे॥४॥ सोरव
सहू मेआगना आयो॥आपआपपोंघे
रजाएरे॥ वानुदेवा श्रमके हे तोजीवो
नरसैयानागोसीपातनेपायरे॥४॥की
र्तन॥४८॥ नोहरेपाषड॥ भगुयानोहरे
पाषंड॥हार आप्यावीनानरसैयाने॥
कम उगेसुरमेसडंड॥टेक॥नांओसर
रूंकीर्त्तनकरतो जोभागीपडेछेलांड
रे॥हरिगुणगातां स्वरमाहारोबेसेतो॥

नर...५

॥२३॥

जीव्हाकरुं षंशात षंड ॥१॥ छबीलाजी नेमुकी क्यम तम नेनसु ॥ तेपेपाडुंपीडरे झपेनरसैयोह वडांहरस्गाडुं ॥ सुक्रा ख़ु तमारोड्रुंडुरे २ ॥ कीर्तन ॥ ४९ ॥ रागसी धुडोकडषा ॥ लंपटी कपटीसी वातकु डीकरे बोल्प विचारी विवेक मेहे ता ॥ षटशास्त्र च्यार वेदपारनांजांणे ॥ ता रेसबदनदामोदररायप्रीता ॥ टेक ॥ सुर तबंरूपरदुसुंजो चरे नागरा आपक्षष ॥

॥२३॥

वीकामवैसवथईये॥नागरिनोस्पमां
अधीकमटकाकरे॥येणीपेरेसामलाच
रणजईये॥धहलामनमतीअतीघणी
सुंदरकलाअतीघणी॥रामरसायण
जुगयणीजकाहावें॥जणोंजीमतुंसांभ
लनरसैया॥तुजवालबेलोकमांकोण
लावे॥२॥कीर्तन॥५०॥ ॥हलालंपटी
कपटीतेजनमनोजुगोसदा॥जेदामोद
ररायनेशरणनाव्यो॥हींतेदीनचरण

नर॰ [illegible]
॥३६॥

टतेघाडी घो॥जेहरीजनथाउरकाहा
वो॥टेक॥हसाअसत्यअन्याईतेवो
लप्यांषेकसा॥कोणधरमेहीबोलेमूढ
मातो॥तेहरीजनथीरंकरूगेफरे॥कुबु
धविषेनेरंगरातो॥१॥हरिजनसाथेहोड
होसिकरां॥जोयेतुंभीमडाभ्री तमाहारी
भणेनरसैयोहरिहरमुनेआपसे॥पछे
कोणकुबुधिग्रीततमाहारा॥२॥कीर्त्तन॥
॥४१॥श्रीरघुवीरधरणीधरासुषकरा ३४॥

दुषहरासी ताजी स्वांमी ॥ प्र[illegible]पतीर

घुपती श्रीपती सुखमती ॥ अवीगत

नाथ अंतरजांमी ॥ टेक ॥ मा:हारे मात तुं

तात तुं भ्रात तुं सुंदरा ॥ हाथ मुस्त:कआ

वीज धरीये ॥ हीनं कूं दीन छुं लीनं माया

विषे रांम कृपाये संसार तरीये ॥ १ ॥ दंरा

रथ बाल दयाल कृपाल तुं ॥ एह बुं जां

णी ने कूं शरणं आंव्यों ॥ भीम भणे मुकं

व्य संसार थी ॥ ज्यम ग्राह थंकी रंम्मरा

यंग जम कांव्यो ॥ १ ॥ कीर्तन ॥ ५४ ॥ हरा

नर: ग्रं०
॥३५॥

अबुधि अज्ञांन ताहारूमन चोदोदी
स भमे॥ पर ब्रह्म लनीग्री ततुंक्यम जांपे
प्रीतविणपर वरे भुरभरमे फरे॥ एहुअ
ज्ञांन तुंक्यम आंणे ॥टेक॥ विश्वकला
व्यापकं हरि सदा॥ तेरघुपती नेतुजजां
पें॥ वेदनेतीकहे॥ नारदसुनिन व्यलहे
तेहरिगोपिकां प्रेममांणे॥१॥ श्री रामर
घुविरधरा धीरधारि सदा॥ दशरथसुत
रघुवीरं काहावे॥ सरवथी अलगोर
मेनी तसुनमें सदा॥ तेघटघटमांहरि

॥३५॥

केम आवे ॥१॥ हुंआं अलवबुद्धि औ

रं ॥ अरथ व्रथा करे हरिजन वीनाह

रिहाथ नावे ॥ मणेनरसैंयो असतन

हि ओचरु ॥ हलाली नथैं गुणातुं केम

गाए ॥२॥ कीर्तन ॥५२॥ रागमारु ॥ सुंकों

लीधी वात में हेताजी मुकोलीधीं वांत

सेतो फोकट करवी आस ॥ भार भागी

गयो रे ॥ टेक ॥ सनेह तमारो सरवे दी

वे ॥ उठगेने वाहाणु वायुं रे ॥ अंव गाऊं

पवित्र थयां अम्हारां ॥ तमो सणगार

इन्ये हसगायो रे ॥१॥ खोटे पाइये भी
ता चढे नहि जुगीत्री तनव्यहोयरे ॥
गोविंदमने जो नाचे कुदे तो अगस्त्रप
पो नहि कोयरे ॥२॥ घुधरा छोडो नेपाल
व ओढो ॥ जोडो वे रूये हाथरे ॥ विश्वंभ
रम्भम केहे तो जीवो ॥ नरसैया जोजागी
कहो रघुनाथरे ॥३॥ कीर्तन ॥५४॥ ॥
हांरे माहारो हरि नहि जाये हा डरे ॥ आपी
उपनोरहो छे कंमाडरे ॥ भोगमनपागासे
रे ॥टेक॥ ज्यां हां विसवांसत्यां हां विश्वंभर

हरीजननीप्रीतनाहोयेरवोटीरे॥वैस
वमारगमांगोथांरवायेतमसरषाजोगी
लरवकोटीरे॥२॥नाच्याब्रह्मानाच्यानार
द॥नाच्यानीगमच्याररे॥गाग्स्त्रतमाग्
बांधीरगषो॥हरजी आपसंहाररे॥३॥
हवडांसांकलवछुटीनेतारलांत्रुटे॥म
धुरामांजमकीधुरे॥भणेनरसैयोहरी
हरस्मनदीजे॥ज्पमदेवकीनेदीधुरे॥४॥
कीर्त्तन॥५५॥रागधन्यासी॥सन्पासी
सरसेमलीनेबेगा॥सोकरवोविचाररे

दामोदररायनागकेवंसाथेतांणी बांध्यो
७ छेहारजी॥टेक॥मंडलीकनेसीषां
मणदीधी॥नरसैयानेविहावोरें॥षडग
काढीनेरायजीरह्योउभोबेडीपाग्य
पेहेरावोजी॥१॥षडगकाढीनेरायथ
योउभोत्यारेरांणीयेसाह्योहाथरे॥
ब्राह्मणनेवलीभगव्रहरिनो॥उभाये
वैकुंठनाथरे॥२॥जेपुरुषस्तुभवांछेपरे
तानुतेपोदंड्यातंजवांअपलक्षणजी॥
परद्रव्यपरनंदापरनारीनांकरवांवच

॥३७॥

नपरी लोपजी॥३॥ कुंडी साषनै हत
नां रमतु हरी जनमुंन करवो कोपजी
अस्त्रीनी सी षामणरायेनामांनी त
वारां बोल्यांमातजी॥४॥ धी करेकुपर
धीककुल ताहारुं धीक ताहारो ता त
जी॥ आधन आचारधीक ताहारो दां
नदयाधीकारजी॥५॥ बलगुणरूपवि
द्याधीक ताहारा धीकधीकधनषंड
रजी॥ गयुरेराज्य कयुं करमताहार
नरैयानेनां छेडरे॥६॥ मातावचन

नर॰ सा॰

॥३८॥

लो पिने वांत्यो॥ करि हरि जननी केडरे ७
त्यारे श्री धरखंडिलेरा जावारे ग्रौअर
थें आयुधली धुजी॥ पेहनी पुत्री पेपरी
क्षा की धी॥ एहनेहरिपेमोस्सालु की धु
जी॥ ८॥ तो हे पंडितनु करूं म ब्यमांनु॥ आ
योस भामोस्सारजी॥ मे हेताजी हारबगा
वो अमारो षडग काढ्यु बाहारजी॥ मे
हेताजी पेपुत्री तेडावी॥ विषम वेला जो
ईजी॥ श्री दामोदर अमो तम्यो शरणागा
त तम विना अवर नहि कोयेजी॥ १०॥

॥३८॥

॥कीर्त्तन॥५८॥ ॥भातावसीमेमामा

आव्यां॥ज्यांहांरूतोराजन्नजी॥बोल्या

माताकुपरसांभलो॥आवडुसुअज्ञान

रे॥१॥माताऐसमननांधरसो॥जुओवात

विमासीरे॥ब्रह्मचारीकेंडेथईलागा॥

तेहवासरवसंन्यासीजी॥२॥मातातेहवां

भीमडोमुजनेप्रेरेछे॥वयमकीजीयेवली

तेहजी॥प्रलंबअधानकापेचढोछे॥ते

हनीकुजीदेहजी॥३॥सोरवसरूकोजो

वायल्पोछे॥सहूनेगमतीवातजी॥संह

नरः हार

॥३ए॥

चरणे रे स्वामीजी केहे छे नरसैयेमांडी
छे विरव्यातजी ॥४॥ साहांनेकउतगनाग
र करे छे वाये चंगम्रदंगनेतालजी ॥ न
गरछत्रस्करे छे माहारू ॥ सरू बोले छे
वांणी आलजी ॥५॥ वलतांमातायेणी
परेबोल्यां दुष्टलोक तमारी पासेरे ॥ तुं
मरख वैस्नवनेडुभवे छे राज्पतमाहारू
ख्सर वेजाडोरे ॥६॥ धीकतांहारागृहस्तीपणो
डा ॥ धीकताहारो भंडारजी ॥ फटमुरख
तांहारूंमुखनां जोडंछपनौतुने अहं

॥३ए॥

कोरजी ॥७॥ मिथ्या तीहारा दी [illegible] संघ
लां मिथ्या मे तु जमाये जी॥ इयवी य्रले
जायेरे पापी जो वैस्नव जन नु भाए जी॥ ८
श्रीधर पंडित ने तेडी ने पुछो॥ मिथ्याए
हनो कु आर जी॥ एस मो वड को एवारु न
थी॥ आपणे राज द्वार जी॥ ९॥ कीर्तन॥ ६॥
राग आसावरि॥ श्रीधर पंडित ते डावीयो
मंडली के तेणी वारे रे॥ माहारु मन भ्रम
थनुं को ण परे मुनु को हो ते विस्तार रे
टेक॥ पंडित वलता ओ चरा॥ तमो सांभ

लोरुआनर॥असत्यरूं नहि ओचरु
दारव वुतुन्हेजी जत्तांनरे॥९॥एनागरेल
काचोपिनथी॥वायेचंगम्रदंगनेतालरे
येणेजगरभ्रस्टकरूं नथी॥गायछेगोवि
दनागुणरसालरे॥ती लकमुभाइणेभ
तां॥जेहनेकंठतुलसिमालरे॥विचित्रवे
स्नववेशसुंदर॥दीसंतोदयालरे॥१०॥रा
यजीमुरवविचारीनेबोलीए॥हरिज
नसाधहोडरे॥नरसैपावेस्नवनेऊश

वीछो॥तमनेमोटीलागा षोडे॥वे॥ये
कमुखेकथाहूंसीकऊ॥नेहनेप्रीतमे
दरसुधीतरे॥पंडितकहेरायसांभलो
नीपनुइहां विपरितरे॥५॥कीर्तन॥५८
रायप्रतिपंडितओंचरे॥तमोघणोके
रोअपराधरे॥जेतुरूपस्तु भवांछेपोता
नु॥तेहकमतवेषेसाधरे॥टेक॥येकवा
रपडासएहनेकरू॥नागरलोकमहा
लंडरे॥तीरथवासीघेरमोकला॥नरसे
यो करूपाषंडरे॥ भूपामंकरीनेमेहेता

जीने रूपैयां आप्यां से हें सातरे॥ वार
कामां हूंडी सकारि॥ सामलीये श्री वै
कुंठनाथरे॥२॥ नरसी ह्मे हे ते मन विचा
रूं॥ नगरे करूं उपहासरे॥ सामलसा
वरदपालजो॥ हूंडी लिषित मदासरे॥३
तीरथवासी चाल्या वारको॥ मनकरी
विचाररे॥ ए चरित्र धरत तणु॥ एणो धन
हरू निरधाररे॥४॥ सामलसायर हां
पधार्या॥ हूंडी सकारि महाराजरे॥ भग
तवछल भगवानजीये॥ राषि सेहे तान॥

लाजंरे ॥५॥ वली मांहामेरु एक [illegible] पुत्री

नुकीधु ॥ कुअर बाई जेहनु नांमरे ॥ त्रणप

सहस्र नागर टोले मल्या जुनो गढ जां

हांगामरे ॥६॥ लषमी नारायणे लक्ष्मी राषी

नागरस भामो स्नाररे ॥ छ बहरिं सव

सोनैये ॥ हरषियो सर्व परिवाररें ॥७॥ घरंते

लोकपाषंड जोवा मल्या त्यां हा अनेकरे

अंतरक्षर हिवे मांहामेरु हसु ॥ एपरब्रह्म

नो विवेकरे ॥८॥ वली वेहेवाई एघणु व्य

गे स्नो ॥ उंहमे देखुनी रे ॥ हरिनाजन

नर॰ना॰

॥ ५२ ॥

सीतला ॰दा तेदा ॰तेनहि ञारि ररे ॥ ९ ॥

त्यांहां ताल मआवी नरसैं ये ॥ आसाप्पो

मेघमल्हाररे ॥ चैत्रसुद द्वादशी ये मेघ

आवीयो तेणी वाररे ॥ १० ॥ एहेवाए वैस्नव

कैंहि येसरा ॥ सां भलो रायजी वातरे ॥

मूरखमंत्री भीमडो ॥ तेहे वासर वसीपात

रे ॥ ११ ॥ तमोकऊं मारूं करो ॥ करो नरसैं

यानेप्रणामरे ॥ श्रीधरपंडित ओचरे साय

जी सरे तमारां कामरे ॥ १२ ॥ कीर्त्तन ॥ ५१ ॥

रागदेवगंधार ॥ ॥ वली श्रीधरपंडित

॥ ५२ ॥

केहेसांभलराये॥ मांहारिमांतकेक
थाकरूमाहिमाय॥१॥ज्यारेबालअव
स्तामांहारिहती॥त्यारेमुनेंब्रह्महत्या
लागीजणछती॥२॥वलताअमोमोटा
थया॥काशीनगरमांपण्डितगया॥३॥
वेदध्वनीमुखेंओचरे॥त्यारेब्रह्महत्यांप
काराजकरे॥४॥कूंअणदत्तजाणुंपुराण
असत्यकूंनहिंबोलुंनिरवाण॥५॥पं
चासकोटनीमदक्षणाकरी॥मेअंण
गजेसीआराध्याहरि॥६॥मेमाहारूद

नर॰ हा॰ १

॥ ४३ ॥

क[illegible]केरीस॥ मे अतीरुद्रकरचोवि
स॥ अतोहे ब्रह्महत्यामाहारीनघटलै
क्षणक्षणदेहडीमाहारिवलै॥ पश्चात
जगन अजामेधजकरा॥ मे अश्वमाहारे
न आप्यामनधरी॥ २ चोहविद्यारूपा
रेभणी॥ मेदेहदमनकीधो अतिघणो
१॥ तोहे ब्रह्महत्यामाहारि नघटवळे॥
क्षणक्षणदेहडीमाहारिबळे॥ १॥ एक
वार जुनागढमोसार॥ रूं अरधनीत्रा
ये आवोमेहेतानेद्वार॥ २ मेमह्सावा ॥ ४३ ॥

सेवक वार वामोकलनारायजी॥अमा
रैनथीकाई कामरे॥अलंबप्रधाननने
करूं रायजी ये॥नांखेशोएहनुनामरे
रीसकरिनेरायओचरा॥जायोआपणे
सरूघेररे॥अमोसंवादसांनेकरुं॥वेस
वसाथेवेररे॥३॥सेवककहेपरधांनजे
तमनेरायकरे छोरीसरे॥मेहेताजीने
घेरमोकलो॥नहिकरकोप करशो ज
गदाशरे॥४॥सीघातसन्धाविसरूमला
डो विचार वोमेमरे॥सरवमलजीनेमोक

मानुकुं दत्यांहां आं अमरे॥ कीर्तन
॥६१॥ ॥रागदेवगंधार॥ रजनी सघ
ली वहि गई॥ एहु नो दामोदर तो आवो
नहिं॥ मंडली के नागर उपर करि दया॥
अमो संन्यासी सुं अमथा रह्या॥ पहु वेष
वनु उपर करे वा॥ संसार सागर तेणे कां
यो धरे वा॥२॥ षट दरशन नाधरम वहि
गया॥ एवडां वैष्णव सांचा थया॥३॥
मुन्हें आवडे अष्टादश पुराण॥ असत
नहिं बोलु निर्वाण॥४॥ मुन्हें आवडे

नर॰ह॰१

॥४५॥

रे वेद ॥ स...धरम नो जांणु भेद ॥५॥
साढात्रपा क्रोडमे कीधां व्रत ॥ मारा रू
डे छे परम पवित्र ॥६॥ साढात्रण क्रोड
तीरथ आव्यो फरी ॥ तुम्हे सिद्ध वाचा अ
पीछे हरि ॥७॥ तुम्हे अमो कहुं मंडलीक
राजा ॥ आज अमारि जाय छे लाज ॥ भा
गेक्षोगल दामोदरराय ॥ नरसैयाने क
रे हारपसाय ॥ ८ ॥ जो दामोदर कऊं नस
करे ॥ तो नरसैयो मालाकंठ नां धरे ॥९॥

॥४८॥

रू अमारु कऊं नहि करे नरेश ॥ तो तुम्हे

रखरे ॥ नगेरनात्पनांगरतंपरे ॥ रोम
गंमदिधांडुषरे ॥ ५ ॥ तमोरमनांकीजेरे
माहारतातजी राषोनाथजी सुंनेहरे
सारघणीकीधी छैसामलोरे ॥ आजक
मदेशो छबीलो छैहरो ॥ ६ ॥ जेणेमारुमे
रौमुजनेकरू ॥ राषिदुए सषामोंलाजे
रे ॥ हुंडीनेसकारिरो ॥ एणोसामलों ॥ तेहा
रआपञोमाहाराजरो ॥ ७ ॥ सासरेजइने
रेसुंमुकरू ॥ ज्यारेरूडासांरगपांणीरे
ज्यारेमंडोलीकमनेमारसोरे ॥ त्या

नर.हा ।

॥ ४७ ॥

निश्चे ॥ आप्राणरे ५ ॥ कीर्त्तन ॥ ६ ॥
आधाररूतोरेहरिमुन्हेताहारोरे ॥ अ
मोअबलाउबलनारीरे ॥ प्रीतडीनि
रूतीरेपेलाभवतणी ॥ तेकममेहेलांसा
रकिसारीरे ॥ टेक ॥ पटकुलछुपदीनांतमो
धरियारे ॥ राषिदुए सभामांलाजरे ॥ दी
नजाणीनेरेप्रभुजीदयाकरो ॥ मेंहेताजी
नेमुकावोमहाराजरे ॥ १ ॥ ग्राहथकी
गजमुकावीयोरे ॥ वाहारेधायाउंगणु
स्वरचरणरे ॥ दासनांदीहलारेसहीन

॥ ४७ ॥

संसकोरे॥ तमोस्तुंसुता सपसलेवरणा रे

२॥ सौरगसरूयेहसा वायुरे हारनेंघणी

लगाडी वारे॥ अमोहलवापडास्युहरखे

भरां॥ बाकनाकां धुनंदकुमाररे॥ ३॥ गुण

डासंभारी मेरे रहीनंव्यसंकुरे॥ येकलडा

स्युंकरशोरंगविलासरे॥ दीनजाणीनेरे

प्रभुजा दयाकरो॥ सरो अमोअबलादें

रि आसरे॥ ४॥ विनतिअमारिरेशोनव्य

सोमलो॥ तमोबर रपालकधंग्रवांत

करजी ङिनैंकरैविनती॥ मानवीईको

नर॰ हार

॥ ४८ ॥

छेमांनरे ॥ कीर्तन ॥ ६ ॥ दामोदर ताहा
रोरे मे हे ताजा ॥ तुम्हारे रे ॥ जनम जनम नो
दास तमारो ॥ तमे कीधी घणी घणी सा
हेरो ॥ टेक ॥ नरसैयाने मंडली करा जामार
सेरे ॥ तमो पोढ्या राधा जीने घेरे रे ॥ गोपीयो
सुं रे रंग रमो रे ॥ ताहारा सेवकनी सी पेर रे ॥
श्री वडी ना बांधा रे प्रभुजी पधारजो ॥ आ
वी आप पार मी ये रंग विलास रे ॥ मोगरानी
मालारे ॥ लेता आवजो ॥ तुरे अमो अब
कोक रा आसरे ॥ २ ॥ ब्रह्मांड भेदकीने त

॥ ४८ ॥

मोप्रभुलापडा॥पाम्यागोकुलमांगमरे॥
नरसैयासाथेरेलोईरह्यारूसपु॥एमनंद
सरेसामलीयाकांमरे॥२॥वृंदावनमोरे
लाडलडावीयां॥तेकयमविसारां॥आज
रे॥रुवडाअमोरे॥दोहलेंषरां॥एमनंद
सरेसामलीयाकाजरे॥३॥दीनजांणी
नेरेप्रभुजी॥दयाकरो॥नरसैयेमुकुले
मांनरे॥एछेरतनबाईनीविनतीरे॥
सामलीयानेकरेछेसांमरे॥४॥कीर्त
न॥६९॥रागमारू॥सामलीयासिर

नर॰ हार
॥ ५८ ॥

होये अमसाथेतो ततक्षण आवजोरे
कहुं एकमाहोराम भनी वात ॥ हारलट
कतां सावजोरे ॥ टेक ॥ वलवंतदीजे ॥ त
मनेबाथ ॥ कोडकाम्यनीनां भ्ररजोरे ॥
तमारे हो ये अमस्तुकाज ॥ श्री तडियेपधा
रजोरे ॥ १ ॥ आवोरमी येमाहमरा त ॥ का
मनीमलीकोडस्युरे ॥ आवोस मोवड
साथेसनेह रंगभररहोडसुरे ॥ २ ॥ अमो
लवांमडोलु आज ॥ तेतमनेगमे ते न
रसैयानेतमारीआस ॥ तेहतेमेमंडली

॥ ५८ ॥

दमेरे ॥३॥ कांहानतारकरे छे सां भद्र
हाव्हाजी विनतीरे ॥ नरसैयेसुमुकु
छे मांन अवरएहनेकोयेनथीरे ॥४॥
कीर्त्तन ॥ ८७ ॥ सखितुंकेहे तीजेकांहां
ना ॥ पेलोपीढारमांरे ॥ एहवासुंदरन
वुरसुजांणां ॥ नहिनरनारमांरे ॥ टेक ॥
बांधोसामळीयासुसनेह ॥ प्रीतजग
चातकीरे ॥ भुंडालोकडाबोले छे आ
ल ॥ हरीजनथातकीरे ॥ १ ॥ हरिगुणगा
तांलोजलागेतोलागजोरे ॥ कमरखा

नर·सी
॥५०॥

तो दांत मागे तो भाग जोरे ॥२॥ सुवर्ण पेहेरता कांन त्रुटे तो त्रुट जोरे ॥ पुन्य करता भंडार षुटे तो षुट जोरे ॥३॥ षाइ मुकी को पः वल गे डाल ॥ काल मुख माक षमेरे ॥ कुंअरबाई कहे मानो विश्वास हरि नहि मुके कमेरे ॥४॥ कीर्तन ॥६८॥ ॥राग सामेरी॥ म्हाराजी वन जाइ वारे ॥ वाहाला माहारी विनतडी अवधारो ॥ विनी ताते जे न तन्हे धन वेऊ रावडी सो वडीवार ॥ टेक ॥ ऊंडुरी

जनदेरवतां आपोमेहेताजीनेहारैरं
बरदतमारूपालजो तमोसेवकजन
आधार ११ नजातेतमनेलागत्रो स्वामि
भगतवछलजगवांनही नाथरै साम
करोतमोसामलो अमोरांकनेसोकजे
हाथ १२ तमोगुणसागरगोविंदजी क
रीगोकुलनीप्रतिपालनरो १ अनाथनी
तमोनाथकाहावो अमोदिननारसा
लो १३ बहुदांनवजोगेवहिंसंघांतमो

नर.हा२
॥५२॥

काहूनेपम्पागमरे॥अमोवीना
ष्पणुरह्यो नहिसकी॥माहारीसेजसु
षविसराम॥७॥लंपटनेलज्जानथी
तुम्हेकोणकेहेशोमाहाराजरे॥प्रीतप्र
सीपाजबारनीअवसरमोटोछेआ
ज॥५॥कीर्त्तन॥६२॥रागमारु॥
श्रीजीमाहारिविनति॥सांभलोजीसा
रंगप्राण॥संकष्टछेतोकहियेघणुए
मबोलेसुरसेनावांण॥टेक॥दासतमा

॥५२॥

रांदोहलांरे ॥ तमोकामसेहेरा मोहा
राज ॥ आजविलंबनांकीजेविरला
गईसरवकोनीलाज ॥ १ ॥ अमोहलवां
पडांदामोदरा ॥ हावेवाहारागुण कोण
गाय ॥ आजबरसनांपालीफुरा ॥ तो
अमोकामजीवाय ॥ २ ॥ सजुसेनाथा
ओसेमलां भोगलभांगोनीअजज
हारआपोतमारादासने ॥ जायेमंडली
कनीलाज ॥ ३ ॥ अमोवीनातमेयेक
ला ॥ मोकामकरवगेविनासे ॥ असप

हार॰ नै
॥५२॥

रसछैकौहांनजी॥ अमनेतमारी आस
४॥ तुंसलहलतोरेसुंदरवर॥ अमो छुंता
हसी नार॥ नाहविनानारिकामजी वे
तमोकरोनीमनविचार॥५॥ स्वामीजी
सेनधीआंणता मनथी उतारोनीरी
स॥ अपराधअमाराक्षमा करोनाथमेसु
कसेनासीस॥६॥ अमो अबलातमनेन
मु॥ अमनेकरोनिपसाये॥ आजनरसे
यानेउलगरीव्यो॥ त्यारेहसा वैकुंवनाथ
॥ रसेनानी विनती सांभलीनैश्री

॥५२॥

दामोदरराये॥आसनथीहरिउगीया
करेदासनेपसाये॥८॥कीर्तन॥७०१
॥रागसामेरी॥सुरसेनानीविनतिजं
पीरे॥आसनथीआव्यासारंगपाणी
रे॥टेक॥संछहब्बतोखलजआव्यारे
सारियेहरषधरिनेवधाव्यारे॥१॥स
घलीबारजानेबिंडुआपीरे॥रीसेम
रसेसघलापापीरे॥२॥नवजांणेनर
सैयोमंडपमांझाररे॥मंडपबांआवे
लावेवमोरारसे॥३॥श्रीमुरखबोध्याश्री

नर॰ हार

॥५३॥

मुगटो सखी॥ नामी रध्यासरवसखि
यांनेसीसरे॥४॥ तमारी स्कृतरस हिन
थ्यजायरे॥ नम्यो स्तरवस्तखियोनेपा
य्यरे॥५॥ स्तर वझारवियोनेआलिंघनरे
दीनवचन बोल्याजगजीवन्नरे॥६॥
सखियोनेकंठे आरोप्याहाररे॥ नैई
फोलुं छेनीस्नरणनीधाररे॥७॥ तमोसा
नेकरो छोविलापरे॥ मेसरपुतमने
आपरे॥८॥ तमोमुन्हेगोवकंन्याथी
वाहलीरे॥ तमारेकाजे आव्यो हुंचा

लीरे ॥ ९॥ तमोमुनेवेचोतोनंचौउरे
काचेतांमणेबांभोजाउरे ॥१०॥ ब्रसा
दीकनेवसनवधाउंरे ॥ जगनकोट
करेत्पाहांनवजाउरे ॥११॥ ऊंतोजन्तु
मलेसुरविथाउंरे ॥ संध्यावांधेत्पांहां
नवजाउरे ॥१२॥ जेहनेक्षणवातणु
अक्षोमांनरे ॥ त्पांहांनवजाउंकहेभ
गवांनरे ॥१३॥ शिवसनकादिकधरेध्यां
नरे ॥ तेतोनहिहरिजनंनंसमांनरे ॥१४
एतोसत्पवचनरूपांधुरे ॥ तोतेनंजा

नर:२
॥५४॥

मनमी गुषुरे ॥५॥ तमोमागो तेहूं
आपुरे ॥ जननु वचन नकुमेनोउधापु
रे ॥६॥ तमनेकऊ विस्तारिनेवातरे ॥
मेहूं तेमाहारू सुषहूरू विरव्यातरे ॥७॥
मेहूं साजीनेंकोहोजे केदारोगायरे ॥
केदारोगयाविना हारकुमअभायरे
॥ हूं तोजर वेसुआसनरे ॥ तमोमानो
मुजवचनरे ॥८॥ आसन आव्यादामो
दररायरे ॥ सरवसाखिऊ नेहरषनांमा
यरे ॥१०॥ ॥कीर्तन॥ ॥७३॥ रागसामेरी धन्यासी ॥ ॥५४॥

सरवसरवियो ते आनंद जपांमी ॥ दे
रेरी सासा रंगपांणी जी ॥ हसी हसी
ने श्री मुरव बोल्या ॥ धन्य धन्य वैस्न वनी
वांणी जी ॥ १ ॥ स रवियारे बांणी आच
रिरे एणी पेरे ॥ सांभलो मेहाराग तां जी
दामोदरराय ने घणु वाहाला छो ॥ तेमां
नो अमारि बात जी ॥ २ ॥ गिरि वरधारि ने
कुंज विहारिं ते साथे छे होड जी ॥ दामो
दरराय सुं प्रित बंधांणी ॥ तेरागकेदा
रानी जोंड जी ॥ ३ ॥ मेहेता जीमन थिरक

हा०र० ५५

॥५५॥ रिराषे नहि मुके नाथत मारोजी॥ श्रीदामोदर रम्य नेघणु वाहालाछो वेगाव्यो निराग केदारोजी॥४॥मेहेताजी कुहे पुत्रिमाहारि देवालुआ केहेवाइ येजी॥ साघरूपे येघरेणेमुक्याछे कोहे नोकेदारोगाईयेजी॥५॥घरणी अरमे तानेमंदिराषतलखिनेआपुजी॥ व्याजसहितधनपोहोताविनागाउंतोजी काकापुजी॥६॥अटकसंभलीमेहेता जी॥ समरथसारंगपाणीजी॥ केद ॥५५॥

रोमुकावानेवाल्पां भक्तवछलमेहेते
जीनुरूपभक्तस्वरूपे प्रीतमहरवनीज
पीजी ७ ॥कीर्त्तन॥७४॥ ॥रागकाल्हेरो
केदारोमुकावानेवाल्पा॥भक्तवछल
भक्तस्वरूप॥धरणीधरनागरनेरूप
धेर्यवाल्पामेहेताजीनुरूप॥टेक॥धन
आपीपतमांगीलीधुमेहेताजीनेम
हिमावाधोरेबहू॥धरणीधरनागरनेघेर
अपंगलुलडीरूतीरेबहू॥तेहनेगेहे
लडीकहीनेबहूकोबोलावे॥तेहनेम

नर. ह
॥५८॥

दिरपधारा श्री भगवानजी ॥ मुस्तकह
थमुकीनेउठाडी तेहनुरूपकीधुलष
मीसमानजी ॥ १ ॥ येकपंथबे काजकरं
तुं हरि आव्याजु ॥ नागढमांहे ॥ मेहेत
जीन्खोत्नेषंतनाषु ॥ अंत्री स्वराहिवेदु
ठरंग्ये ॥ ४ ॥ तेश्रीपातांसर्व कोणे दिठु
मंडलीकपासेमागयुमान ॥ नरसैयोई
श्वरनोसेवक ॥ कस्युकरेहगीलाराजा
न ॥ ४ ॥ अन्योअंन्यसहु वातकरे छे ॥
हरिरषतेआव्युदामोदररगए नरसैया ॥ ५८ ॥

नागरनेघेरमोकलो।नाहितरआपणो
महिमाजाये।५।तोलाज्ञाथीततक्षण
आव्या॥कहेधरणी धरसांभ्लोराय
हरिनाजनहरिस्वरषाजाणोमेहता
मीनेनागोरेपाये॥६॥कीर्तन॥ ॥
धरकांपोढ्याकमलापती॥रामानंदस्व
स्येकहिविनति॥१॥तमोजुनागढमध्येव
गेजायो।नरसेंहानागरनेकरोपसाये
२॥आव्यारामानंदस्वामीजोड़ार॥एहवे
सभायेधरणीधरकेहेछेविचार॥अ॥मे

हार· बर·

॥५६॥

हेतानेरूपें आव्यांश्री भगवान॥ माहा
रिअपंगवहूकी घिलरवमीसमांन॥४॥
गरघआपिषतलीधुहरि॥ अेहेवीधर
पीधरेवांपीआचरि॥५॥ तेसीपातसां
मलीउसनगीरथयां॥ मंडलीकरायवि
चारिरह्या॥६॥ अन्योअन्यवारताएमओ
चरे॥ वैसलवसाथेवेषजकोपाकरे॥७॥
दक्षणावंतगंगोदकभरो॥ नरसैयो
नागर वैष्णवषसे॥८॥ गारबेरतनगलाणु
रंयि॥ रतनजडेंनेझीवेगाय॥९॥ येवडी

॥९७॥

प्रीतदामोदरकरे॥ भोगी भोगतनहार

कंठधरे ॥१५॥ तेमाटेसेहे तानेमोकलोघे

र॥ आपणखास पासाथेनाकीजेवरे॥

॥कीर्त्तन॥७४॥ ॥ रागसामेरी॥ ॥ स

मायेसभापति ओचरे॥ नरसैनाग

रतुं अविधरर॥ लंपटपणु छांडिदेतो

हरिहेलां आपेहाररे॥१॥ जायोनागर अ

मोजुगतिजांणी॥ एमउच्चराश्रीपातरे

श्रीमवांणी ओचरे॥ अमोजांणोतांहारे

नायरे॥ २॥ मेहेताजीनेपर...केहे छे

नर॰हा
॥५८॥

अमोजोरं सघली पेररे ॥ तम्यो ब्रालण
ने अमो क्षत्री म्यांनै कीजे वेररे ॥ ३ ॥ मंड
लीक केहे छे नरसैयाने ॥ हा वेजायो तमा
रे घेररे ॥ त्यवारां रामानंद ओ चरा ॥ तम्यो
जोड़ी संसारनी पेररे ॥ ४ ॥ षट आपुं राम
दरें त्या रेरू रूथयासावधांनरे ॥ स्रर द
मली नेमी छवो तम्पो द्योम्है हे ताजी ने
मांनरे ॥ ५ ॥ नरसैयो हारमगा वजोमानजो
अमारी वातरे ॥ रूं वारकंथि आवियो
रामानंद श्रीपत्तरे ॥ ६ ॥ कीर्तनो ॥ ७५ ॥ राग ॥ ५८ ॥

देवगंधार ॥ ॥जेहरिजननीनिंद्याकरे॥
तेकोटकल्पवरसनरकसांचरे॥टेक॥
जेकोईकोहोनिभरवपक्षकरे॥तेसंन्पा
सिनरकसाचरे॥१॥नरसैयानागरतुअ
ंधार॥भरवेपांडुरपुरमोक्षार॥१॥रोसेब्र
ाह्मणेआंणीम्रतगाय॥लेईबांधीसत्सं
गनसभामांहे॥२॥आनामदेवेगायनि
सजीवनकरि॥तोतुक्सासिमात्वाकंगज
धरि॥३॥तेनामदेवेजीवाडीगाय॥एह
वासमरथ्थवैकुंठराया॥४॥पंछेभुरंनौ

नर.हा
॥ ५९ ॥

कअलगाथरईरह्यां ॥ वैस्नवनाधरम
सावाथया ॥ ६ ॥ जगंतभगतनेआदेवे
र ॥ तेमेहेताजीनुचितघेर ॥ ७ ॥ जोप्रल्हा
दजीनेकोप्योतात ॥ विभीषणनेदियो
विरेक्षतात ॥ ८ ॥ अंबरीषउपरदुर्वासाव
पियोउवदैस्नवतोवनमांगयो ॥ ९ ॥
श्रवणसाथेअबलाअडवडी ॥ भरथ
वैस्नवनेमातानडी ॥ १० ॥ सुधनवाउपर
मेहेलुंबांण ॥ कोप्योकरणनेकोरवअ
जांण ॥ ११ ॥ पांचस्त्रीनांपाघरुंपगयहां

॥ ५९ ॥

ऐहवांरामानंदेवायककस्यो ॥१२॥ तेमा
टमेहेताजा रूं तुजनेक रूं ॥ संसारचरि
त्र रूं मघलांल ऊं ॥१३॥ जोहारली धावि
नाजाशगेघेर ॥ तो वैसवजनुनी कोण
पेर ॥१४॥ भांगी भोगंदनु मंगादेहार ॥
त्रिभुवनवरतेजेजेंकार ॥१५॥ नीजधरम
नासाक्षी माहाराज ॥ गांमगांम भगत
नीराषिलाज ॥१६॥ रहोवेगळाआपआं
पणेगांम ॥ हावेडगमगासें आवेकांम ॥१७॥
एहवांरामांनंदेवायकओवरां ॥ सारे

नर॰हार

॥६०॥

मेहेतोजी हरषे भरा ॥१८॥ कीर्तन ॥ ७९॥

॥ रागकेदारो ॥ माहारोवाहालोजी राग मुकावी लाव्या ॥ षतवां चिनेषोषारारे पेंछे केदारोआलाषिनेगायो ॥ माहारे सांमळाये क्षणुनां विसारोरे ॥ टेक ॥ मधुरेस्वर केदारोगायो ॥ माहारोगोरे रिसी गमांपोआव्योरे ॥ गमकेघुघरिने नृत्य करे ॥ माहारोरागकेदारोमुकाव्योरे ॥१॥ प्रगटथायापोतलीपासभामांसुजनेआपोहारनी ॥ आवोछेलछबीला

॥ ६८

सांईडुंदीजे॥ज्ञांनेतनगाडो छोवाररे॥२

मतवतामंडपमांअंगवो॥हरिमेंजांणपो

दिनदयालरे॥सभासरतदेखतां॥

कांहांनुडा माहारेकें॥आरोपोमाल

रे॥३॥एमकहिमुसलकेषतमुकु॥सरव

मारवियोधरसावधांनरे॥जयजयका

रंबोलोकहेनरसैयोसरवसुंदरि

योकरोगांनरे॥४॥किर्तन॥७॥राग

मेघमल्हार॥जीरेचोहोदिशजोटंता

हारीवाटड॥माहारोसांमनांआवे॥

नरस्हार

॥ ८१ ॥

मंडलीकषडगकोढीरहो तुजविना कोणमुकावे ॥ टेक ॥ हरी लाजी हर मुकीये ॥ हार आपिएसुन्हें ॥ मारारे माहारा नाथजी लज्जा लागशे तुन्हें ॥ १ ॥ तमोगजकारणगरू इछेडीयो ॥ अणु आंणउंज्जांणो ॥ नरसैयाने हार आपवो आवडो ॥ शुरिसांणो ॥ २ ॥ वामन रूपे बलीछलो ॥ धराविप रकीधी ॥ इंद्र इंद्रासनउगारि ॥ सुश्रुरु बलनेदिधी ॥ ३ ॥ वाहालाजी ॥ आनुकीधु भक्तु ॥ गरथ

॥ ८१ ॥

गोगेजोहोतो॥ वेगेलषमी वर आवि
यामुन्हे कीधो समोतो॥४॥ तमोराधा
सुरंगे रमो नरसैयोमुक्यों विसारी॥
छबीलोजी निजके गयी हार आपों
उतारी॥५॥ नरसैयोविनातिविनवे द
मोदरराय सुजांण॥ तमो हुगे गयी
बोलता मंडली कअजांण॥६॥ कीर्त
न॥७०॥ राग आसावरि॥ देवातुमक
सोगकोर॥ हमकसासेवका॥ करम
चालेषषुसांणीनांजारे मंडलीक

नर·हार
॥६२॥

हारनेपेरेपेरेपरभवो॥छिबिळावि
नाडुःखकोहोने केहेवाय॥टेक॥
मुन्हेयेक कहेलंपटीयेक कहेलोभी
यो॥येककहेतालकुटीयोजषोटो
सारकरमाहरीदीनजांणी हरि हार
आपोस्वांमी तुजमोटो॥१॥ऊरेवेह्रेवा
ईयेअतिरेविगोईयो॥उलजनमु
कीउपहासकीधु॥मेघमोकलीय
हतांणी नांषु तेहनु॥आपुलादासने
मांनदीधु॥२॥सुन्हेमाहाएवजीनेहृ

६२

हार नरुं
॥ ६३ ॥

मुन्हे सोरठ मां हंस रूदो सा चोक हे ॥ आवि स्त्री ने मान्हामेरू तेज कीधु ॥ नागरि नात मां इंडु चढावी सु नरसैंयाने जग्ती मांन दीधु ॥ ६ ॥ कीर्त्तन ॥ ७ ॥ भो गल भांगजे राय दामोदर ॥ उगो जदु नाथ देवाधिदेवा ॥ राय मंडली क मङ्ख र ओचरे ॥ नरसैंया नागर नी स्ता विसेवा टेक ॥ भगत पालक दयालतुं सामला ॥ माहारे शरण पर ब्रह्म श्री तताहरी ॥ नागर साथे नवल नेह राषवो अकल

॥ ६८ ॥

चरीज्ञमोहरिमोरारी॥१॥जोमाहारे
नरहरिनांमरूदेवसु॥तोपतिंतपा
वनताहारूबरएकाहावोग्राहथकी
गजमुकाव्योचरंवड़ी॥तमनरसैया
नागरनेमुकावो॥२॥॥किर्तन॥ ॥
हेहृलक्रपानिधकेशवा॥रू॥जंअ
नाथतुंनाथकहिये॥मंडली कहा
रनेपेरेपेरेपरक्षवे॥छबिलाविना
दुःखकोहोनेजकहिये॥टेक॥रू॥

सारंग॥ ६४ ॥

शरणआंव्योसंसारनेपरहरि॥ तुकां प्रभुपिरेपेरेपीडे॥ अंतरगतअविलोकतांसामला॥ तुजविनारहस्या स्युंकोपणभीडे॥ १॥ माहारामनमां हरषघणोछे॥ तोप्रभुमाहारुडुष सेनांजांणो॥ भणेनरसैयोभ्रूरणं प्रीतताहारी॥ मंडलीकमुजनेमार सेजवांहांणे॥ २॥ ॥ विहुन॥ ९॥ ॥ ६॥

सारकस्यसारकस्यसारकस्यसा
मला॥सनमुषथईनेजोनीआज
अमोनागरजवाराहठकरिबोल
सुनहिरणषुत्रिकुमातोरिलाज॥टेक
हरपागोकुलमांहेगलकतोफएं
काहानुंआनवनीतआहिरनांली
जचोरी॥चंचलचोरसुमुषनथीबो
लतोहवांअमोलकाराषुजतोरी॥

हल्या बहू पेरेगोपिने लाडडावी यां
अन्न आहिरनां छेरे चाषी॥ नदु आपे
पोरंग भोगवी लाक रं॥ ते नागर नर
सेंयो रह्यो जसांषी॥ २॥ कीर्त्तनि॥ ८२॥
मोगरे श्रुमो हिर स्थः छोसांमल्ला॥ दार
आपो जसरव्यात वाधे॥ केहे छेनागरो
को होनुनामगातो रूंतो॥ हे क सजो
तुजने कोये नहि आराधे॥ टेक॥ हल्या
सारिपंतिना टौक संर वेमल्पा जेह॥ ६॥

नी सारकरज्यो तेहनी पासथाज्यो॥
मी तने भावे नरसैयो विहितो नथी
हेकृस्नजी॥ताहारो जसजगदीश
आज्यो॥१॥रजनी सरव वहिगई
नहिराखु॥ज्योतक्षीणथई जायरे दी
वा॥केशवाकरज्यो मा(?)(?)वडीक
रो॥आरोपोनरसैयानी जग्रीवा॥१॥
किर्तन॥१३॥हलाहारने का जेस्नुहव
करांसामलना॥जात्रवानैंतोरेपास आ

हारनंर
॥ ६६ ॥

व्यो ॥ राधिकानेसंग वैगेरे वातोकरो
कीहारे वैकुं गयोतुंजत्या व्यो ॥ टेक ॥ ता
हारु नांम विश्वंभरधरु ते वसांसीयो
तुंनंदनो छोकरो छासपी तो ॥ कांमटी
ओढतो लाकडीहाथमांगा वडीचार
तोवन्नरेहेतो ॥ १ ॥ माहारेमातनुं तातनुं
भ्रातनुं घरां ॥ तुजविनाछ दुंषकोहोने
जकहिए ॥ भणेनरसैयो ताहारा गुणमारे
जीवियेएंकवांपतल मांकसमरहिए ॥ २ ॥ कीर्त्तन

॥ ६६ ॥

॥ हल्मे हारने काजे श्रु विलंबवामो
गणे नहिरे कंसतेमा मनमा विद्युस्मे
नहिरे कौस्तुभमणी विद्रुममाला ॥ उ
रनांपुष्पनेसूत्र नीतांतणो तेणेश्रुमो
हिरंस्योछे नंदनानंकाला ॥ टेक ॥ हलो
उंचनेमुकी कोईनी चनेआंसरे ॥ जोनी
तुंजाइवामनविमासी ॥ राजानी दिक
रिरुकमणी परहरि ॥ कंसनी कुबडी
घेरवासी ॥ १ ॥ हलारजंनीसरषे असप

नर॰ हौ
॥ ६७ ॥

रहीलजानहिराषु॥जोतलक्षणषर
जायरेदिवा॥केशवाकंदयी मालावडी
करोआरोपोनरसैयानीजडीवा॥४॥
॥कीर्त्तन॥८५॥ ॥हल्या आप्परेहार व
सुदेवसुतनंदनो.आप्परे आप्पतुन्हे
लाजघोडी॥केसनाभयथकीनासी
गोकुळगयो॥रह्यारे आहिरडांसंप्रीत
जोडी॥टेक॥हलागरजमाटेमायबाप
तेबेकह्या॥तेसुरअसुरमुनिसर्वजोता॥ ६८

कंसेनोबंधकरी काजंताहाकंसरं ॥ ब्र
जबापदांमेहेलोवनरोतां ॥ १ ॥ भगतकः
रि आहिरन्नोनाहवो ॥ तोमुंन्हेहार तुंक
म आप्पां ॥ म्हणेनरसैयोरजनी थोडी
रहि आप्प आप्प तस्कर मुन्हे कांसंतापा ॥
२ ॥ कीर्तन ॥ ८८ ॥ ॥ हल्याउम्परेसोम
लोमेहेल्प्रमन आमला नथी बोलतो
मुंअभी मांनमाटे ॥ आपिएहारकेमग
टहवडाकरुं ॥ जेकामकीधुं वंशी बटघा
टे ॥ टेक ॥ हल्याअणद्रसिनांस्पुतेभोगवी

नरं॰ सा
॥ ६८ ॥

भुधरा॥ परणतां ग्रथमो वे जे ताहरे
हारनी वारथी मार भागी गयो ॥ कुकहो
येनाथजी वारे वारे ॥ ॥ कहां जुगमांहे
मती तग ई लोक नी वैसवनी वेलाकोपा
थासे ॥ भणे नरसैयो रू जहल वोपडोप
ताहारो जसहा वे को पा गासे ॥ २ ॥ कीर्त्तन
७ ॥ ॥ केरो की र हिरग धि कारंगजामो
घणो ॥ रसी ला रा तरहो जथोडी ॥ नंदना
नंद तुं सां ने आ लस करू ॥ मुजनागरसा
ये कां म्री तलो ड़ि ॥ टेक ॥ देवकपालीये ॥

॥ ६८

निकामव्रजावलीये।ईश्वरपदपांमीयो

उमयातस्वांमी। सांमलातुजनैंलो

कलंपटकहेथयोविभीचारिकांहान

डकांमी।।हवकरंतेहसुंहवकेरेसांम

कां।तुटशेसनेहत्रिकमतंणे।।माणोत

रसेयोअवधप्रसर्वंबहिगरमंडलीक

मुजनेमांरसेजवांहाणे।।१।।कीर्तन।।५

हल्माउवरेअटपटा।।नथीबोलतोवर

पंटा।लंपटालाजताहरीसर्वजाशे।

व्रजपतिरंगमांकेलीघटांकरा।तमां

नरसैया विना वांहारे कोण धाशे ॥ टे

का ॥ हलाउ गतुंहड बडी ॥ सुके गेहडब

डी ॥ वात घाढी पडि मुज सार्थे ॥ धीकटा

बरद कां हा वुते फोकटा ॥ निगमी लाज

ते तुज हाथे ॥ १ ॥ हलां जोवु लगमगे अं

ग अमर फगे ॥ टगमगे नेत्र जो वाने रूप ॥

नरसैयो लगमगे लोक सर्व चगमगे ॥ को

प्यो मंडलीक उघ भूप ॥ २ ॥ कीर्तन ॥ ८९ ॥

हलां नव बोलां सांमलां ॥ आवडा सा अ

मलां ॥ मां मलां मन्नतेक्यम राष्यां ॥ कोट

९९

ब्रम्हाडपति ब्रह्म हे तु जवकुळम्हला ॥ आ
ज अमो हा यद्यो क्यम नाथ्यां ॥ टेक ॥
हस्ताग जाडुगारियो गिरि ते तारियो वा
रियो रावण लंक रुप ॥ हवारम्क तुंहा
रियो केकोपे वारियो ॥ कैं नारियेमो हि
रंद्या निजरूप ॥ हस्तांमुकरे मर कैंडां
का फोके टज्ञां फरडका ॥ हरषे अंगसु
के जवाहास्ता ॥ नरसैयाविनाकोण
श्रीछवेसामस्ता ॥ नगरेनाथय पेनंद
नाजकास्ता ॥ २ ॥ कीर्तन ॥ ९० ॥ घरघरे

सुरनर
॥७०॥

काहांनुया॥ताहारूमनभमेजुजुया
जांणेनागरोकांईदांनआपे॥लषमीव
रलालनचकरांसदा॥सुजरांकनेतस्कर
कोसंतापां॥टेक॥हस्नातांउखलेदरोव
विघ्ननेबोकती तेहनुफोवनकोधुमै
ऊंगसरषु॥माहारेहांनतेंग्यानछेसुर
रा॥नातपततारांचरणनीरषु॥६॥
हलामन्नमोदुकरां॥कंगमालाधरां॥ह
रषिहेलांमंडपआवो॥भणोनरसैयो
रजनीसरववहिगईउदेबंधनप्रीसु ॥७॥

नेहतुकावो ॥२॥ कीर्तन ॥ २१ ॥ राग देवगं
धार ॥ विष्णीचारिस्वुंरेप्री तडी ॥ प्रीरंगे
तुरातो ॥ मेंडलीक हारनेप्रभवे ॥ बोलेन
हितुंमरक्षरमातो ॥ देक ॥ हलाकामी थयं
रेकेसवा ॥ करूपानी धपापी लोपी लप
मींनाथतु ॥ रतनासंतापी ॥१॥ माहारे वा
हारेचढोरे वी गरना ॥ ताहारु वरदजांहो
मंडलीकनं रसैयाने मारशी त्यारे तमो
कयमरेहेवावो ॥२॥ कीर्तन ॥ २२ ॥ ॥ राग
कालहेरो ॥ ॥ महाराडनो सुपथी नांखोवे ॥

हारव्रर
॥७५॥

जोज्पोजुगेयदुनाथरे॥ ध्रुवारोधरणी
धरआंणज्पो॥ अटक्योनांमुकेवातरे
टेक॥ गोकुलमाहेथयोरेगोवालीयो
नवनीतनोचोररे॥ कोटीभगतनोआ
धीनसदा॥ येपेजुवंभासांबोररे॥१॥घर
आधीनघरपेटजभरतो॥ तेतुंगुजर
नांधानरे॥ नरसैयासाथेहारनेकाजे
आवडुप्रभुअभीमांनरे॥ कोहुन॥२॥
माहारेमंडलीकथंपडीछेहोडरे॥ मुन्हेता
हारांचरणजोवानांकोडरे॥ मुन्हेभव

॥७१॥

चरा बंधन छोडरे ॥ तमो जषमारस्सो ने
मुन्हे हार आपज्ञो ॥ टेक ॥ मुन्हे तमो वे
चोतो वेचा उरे ॥ काचे तांतणे बांध्यो जा
उरे ॥ रूं तो गुण गोविंद नागा उरे ॥ तमो.
जषमारस्सो ने मुन्हे हार आमज्ञो ॥ तु
न्हे गुजर धनार बांधती तांण्णी रे ॥ स्यार
रूं मुकावंतो सारंगपाणी रे ॥ मेतो भोठ
मता हारि जांणीरे ॥ २ ॥ लोक वरु यांबो
ले छे माहारा रे ॥ टांकय माहारा के ऊघा
डी आता हारां रे ॥ ३ ॥ हवे ताहारा मनडां

नरसी

हजु नथी हारां रे ॥ तमो ०॥३॥ तु मे स्त्र
षभ्यांन सुतार हि छे राषी रे ॥ तेमाहा
राम नमार स्यो छुं सांषी रे ॥४॥ मे ता कर
प्या ताहारी भांषी रे ॥ ॥ अमो नागर बर
डक बोलाक हियेरे ॥ कस्यो कथनमां
आंझी ये कैर यरे ॥ तुं विण शरण अमो
को होने रहियेरे ॥५॥ ताहारो नरसैंयो
रासें भराय रे ॥ मुज विना जस ताहारो
कोण गाये रे ॥६॥ तुं विना वाहारे माहारे
कोण थाय रे ॥७॥ कीर्तन ॥९४॥ राग प

रमाति॥ भांगपभांगपभोगदलसाम
लडारेसाथी॥गेहेलडांमुकोरेगोवा
लारे॥आ[illegible]रडांनेआवडोम्रुअटक्यो
मुन्हे॥आंप्पमोगराभीमालारों॥टेक॥ह
वेनहिदेउंगालनरहरनांहनडीया॥
बादुडामेबलवंतजांणोरे॥बिधविरं
चिताहारोपारनांजांणे॥तुन्हेवेदपुरां
णेवषाणोरे॥१॥सुकसनकादिकध्यां
नधरेसदा॥तेनंरतणेपीडारोरे॥ते
लंपटकहिभैमेरेबोलावियो॥तेम्रच

नर: हा
॥ ७४ ॥

मवांक अमारोरे ॥ २ ॥ आवो आलिंघ
नदिजेवाहालां ॥ सुंदरमुषडूं निहालु
रे ॥ भणे नरसैयो रजनी सर्व वहि गई
यसुत्रै लोकमां अजु आतुरे ॥ ३ ॥ किन्न
न ॥ ७५ ॥ आगो जदुपति रजनी वहि
गई ॥ मंडली कमुं जने बिहावे रे ॥ अरूण
उदयो नेहरणो आथमणी ॥ तोहे तुन्हे
स्यानां आवे रे ॥ टेक ॥ वलोणां वलो
वाये जे वेदं भणाये ॥ मां मनी योभरे
छीपां नीरे ॥ आविसकोनांद्धि सुरधीर ॥ ७३ ॥

माहारो सके यशोदाजी ये बांध्यो तो
पीरे ॥१॥ सुचकंद कुंभकरण बेहू ते
जीत्या ॥ तेहूनी निद्रा तुज नेवाधीरे ॥ ज
दुपति दिन रूं कांई नव्य आणु नाहारो
नरसैयो नागर अपराधी रे ॥२॥ संकेष
तवांचतो अमो रे षोषारा ॥ तेत मन वे
ढी छे रासरे ॥ आवो रे आलिंघन दीजे
सांभल डाल्या रे कसाम्री जुगदी सरे ॥
३ ॥ अमारे अंतर कइगो रे भेगरे ॥ ऊंदंजे

दासनोदासरे ॥ आंगणीमुषधरिनेर
सैयो ॥ वाहारे धायो श्री अविनाशारे
४ ॥ कीर्त्तन ॥ ७६ ॥ ॥ रागवसंत ॥
कमाड कडांक डकडीयारे ॥ गडग
डीयांमंडळीका । नांमंदिररे ॥ भोगल
भागीनेतालांत्रुटो ॥ धारणांमसु
ररे ॥ टेक ॥ षढहडीयांघंटकोसीसा
पडिपोल्प पिंगाररे ॥ नागभुरसभ
यीसांवकोये घरर थोहारुकाररे ॥ १ ॥ ७४ ॥

आंसनथी उग अविनाशि ॥ आव्या
मंडपमो ज्ञाररे ॥ सरव सभा देषतां
आरोप्पो कंठमे हेताजीने हाररे ॥ २ ॥
पीतांबर श्री तेओढाडुं ॥ आप्यां करण
कुंडल जोड्यरे ॥ मुगुट मुस्तक समरपे
नाख्यो ॥ जेजेश्री रणछोडरे ॥ ३ ॥ सुरवे मो
रली मधुरि वजाडो ॥ दीनोनाथ दया
लरे ॥ रंगीलो छबिलो छोगाळो गो
वालो ॥ तें दे भेरी करनालरे ॥ ४ ॥ जे

यजयकार बोलेसबवसारवियां॥ध
न्यधंन्यंगोकुलनारायरे॥नरसेया
नेफरिफरिफेटेहेंडेहरणांमायरे॥५
॥कीर्तन॥९७॥संन्यासिवेरागीवि
स्मेपांम्यावरत्योहाहाकाररे॥जेहनेजे
हवोतेहनेंतेहवो॥व्यापिरहोगोपालं
रे॥टेक॥नरसिंहाश्रमेनरसिंहरूपदी
ठु॥मुकुंदआश्रमेमुकुंदरे॥अचिंत्यआ
श्रमेअचिंत्यरूपदिठु॥माधवआश्रमे

माधवरे ॥२॥ अच्युत आश्रमे अच्युत
रूप दिग ॥ विश्वंभरे विश्वंभररो ॥ विश्व
श्वर आश्रमे विश्वरूप दिग केशव आ
श्रमे केशवरे ॥ रघुनाथ आश्रमे
रघुनाथ रूप दिग ॥ भीमे दिगंबरे
राजानी भाये चतुर्भुज दिग ॥ रांणीये
दिग सुंदर ... रे ॥ श्रीपात पंडिते
सुंदर रूप दिग श्रीधरे दिग ब्रह्मचा
रिये ॥ ब्रह्म ... यीये ब्रह्मरूप दीग

हारन०

प्रसाद करियें त्रिपुरारी रे ॥ ४ ॥ प्रत्नवे
प्रलंयरूप दिग मंडली केदी ग के काल
रे ॥ सप्ताये दिग सुरश्रिरो अपणा ॥ सजुने
दिग बालरे ॥ ५ ॥ ज्योगध्यांनी ये ज्योति
रूप दिग ॥ कु यर बाईये दिग तातरे ॥ मे
हतेजी येलटका लोछ बीलोनिरष्यो
श्रीगोकुलनोनाथरे ॥ ६ ॥ जेहनेजेहवो
तेहनेतेहवो व्यापिरह्यो करुणालरे ॥
मेहतांजी नेकेंठओरोगी लोरभेगर

॥ ७६ ॥

नीमालरे॥७॥रागरागनुतानवजाडे
मुरलीमदनगोपालरे॥जेजेकारबो
लोकहेन॥नैयोहरिभगतवछल
प्रतीपालरे॥८॥किसन॥२०॥राग
आसावरि॥श्रीदामोदरेकोधीस्या॥
नरसैयानागरनोराषोरंग॥आपणा
सेवकनेसुषकारणे॥रायमंडलीकको
थोमनभंग॥टेक॥कोईकहेकांमीको
ईकिहेकपटीपणसेवकनेतमारीआ
सरे॥राषिलाजसभामांसांचो॥उर्ज

नर·हार ॥१०॥

नसघलांकीधानिरासरे ॥५॥ कली
जुगमांय्येक अत्यक्षादिगु ॥ नरसैयाजी
त्योहोडरे ॥ आप्पांकुडठ्यांहां वली
कांहांने पितांबर आप्पु कट छोड़रे
॥६॥ येपोजारजात्यनेकोरनेवज्रजाणु
वैष्णवसायेकीधोवादरे ॥ अंत्यजगत
अंत्यजनोजायो ॥ एमबोलेप्रजा ब
घरिवल्हादरे ॥७॥ जयजयकारहयो
सोरगमांहेहरषे ॥ आप्पोहारहरी ॥
मंडली कांगयेनीमांनिगमी नरसै ॥१०॥

यानागरनीरष्याकरा॥४॥कीर्त
न॥९९॥ ॥ओलगोनिफलिनां
नाये।जेणे।ओलगोगोकुलीयानो
राये॥टेक॥ओलगोध्रूवप्रल्हादवि
भीषणअंबरीषबलीहनुमानरे
अंक्रूरऊधवनेसदामो विदुरभगत
बरसांनरे॥१॥ओलगोवेगेद्रुपदतन
या।चरणेअहिल्यातारीरे।कुबजा
नुवंदनमागालीधुएणेगोकुलरा
षुगिरिधारिरे॥२॥ओलगोवेगेश्रंज

नीविनिता॥ तारपातरपामोरारे॥
ओलगोप्रितकरिजेजनस्मुलीना
कुंजविहारिरे॥३॥ भगतछजसह
हरिदाता॥ भगततणां बरदकाहावेरे
नरसैंयाचास्वांमीनेसमरतां॥ पुनरपि
जनमनआवेरे॥४॥ किर्तन॥२००॥
रागपरभाती॥ जीरेधन्यतुंधन्यतुंए
मकहेश्रीहरि॥ नरसैंयातुंमाहारोभ
कसाचो॥ मेहेलीउरूषारथसर्वरेवे
दोधर्णो॥ ताहारगप्रेमथीरूरेनाचो॥ टेक

जीरेमुजमां तुजमां भेद नहि नागरा

मानतुं माहारि वेदवांणी ॥ हजुयेपरती

तांनांउपजे तुजने मोकळुंमे तुन्हेटा टु

पांणी ॥४॥ जीरे माहामेरु की धुतेकेयमग

योविसरि हार आप्यो रे प्रत्यक्ष रूप ॥ चौ

दलोकमां माहारे तुजसमो कोनहि ॥ ता

हरुं माहरूं येकरूप ॥५॥ ताहरो आसरो क्ष

रगान्यने सांभळे तेहना कुळसहित पाव

नथाय ॥ प्रणेनरसैयो मीचांबोली सुरी

संवो ॥ प्यारे कर जोडी कृस्नजी ससंपाये ॥६॥

नर॰ स्वार
॥७८॥

॥कित्तन॥२०१॥ देवामेगायो ब्रह्म तेप
रम आनंदरूप कर्मचा जीव ते मरम बो
ले॥ धर्मधुरंधरा तुज ने जांणे नहि रतन
गुंजा करे॥ येक तोले॥ टेक॥ निगम ने अ
गम सुगम हवो गोपिने॥ ते हनो पार कोई
न व्यजाणे॥ रमापती ने रूपे रूचित महा
कामना॥ कामीनाथुर तेभ्रम आपे १
पुरणब्रह्मत्यांहां सदाये आनंद छे आ
न आनंद त्यांहां आ ग्रहो ये॥ नरसैयो
मंदवाणि गांय छे गुणकथी कामियोस

७९

मझोलेकामनोहे २ ॥ कीर्त्तन ॥ १०२॥
हरषिहरिओचरे नरसैयो चितधरे
सांभलेसर्वसभाजवात ॥ हार आपिह
रि विनयविनतिकरि ॥ सुनसुषरह्याह
रिजोडिहाथ ॥ टेक ॥ मममांपावैष्णवसदा
जनमजीवनसदा ॥ दाषवीदामोदरादि
नवांणी ॥ कुसंगरससरवपर हरिप्रेम
प्रीतिवरि ॥ हरणपरब्रल कहेमप्रित
आंपी ॥ आदिकुंदीनछुजनमदेनी
मछु ॥ लोपालेसा मेहेता हार बेरंग ॥ पदं

हारनर
॥ ८० ॥

टब्रह्मांडपति करूं हूं विनति ॥ नरसैंया
वचनतुमांनमोरं ॥ १ ॥ कीर्त्तन ॥ १०३ ॥
देवातुजनाचेहूं तालबाऊं ॥ तालचे
शब्दवैकुंठजाऊं ॥ अनेकउगतषीगला
पारषुनादकरिभेदतुजहूंवेगाउं ॥ टेक
देवातुंधरंवांसली छोडघंटावली ता
रेकेसरितिलककटिजंत्रसाहू ॥ राधिका
हाथतुजबांहिश्रीवांधरं ॥ त्योरेरंगनी
रेलसाहूं तणाउं ॥ देवातंतविणारस
नावलरिझाझरि ॥ घुघरिपगपधरिवस

कगाउं॥ अपूरवं ष्यवातमानेरंगाटा
लाकरां॥ त्कारे जुवतीनाः सुष्यमांहूंस
माउंरा॥ देवाकंचुकिबंधउरहारकौस्त
भमणि मुगुटमणिमेषलाश्रीयत
गाउं॥ मान्पनी संगज्यवारांग्रबलं अम
रीफरां॥ ताहारावरणनी रेणुमांहूंजना
ऊं॥३॥ देवा अति आनंद्प्रबलवलसी
मतां॥ एहवारिझतांदेषिनेरूसराउं
अपनेरसैयोजिघंटरंगेरमो॥ देवातु
जसरिभडोहूंजथ्याउं॥४॥ कीर्त्तनं...॥

हाडूनर ॥८२॥

राग असावरि ॥ श्री गुरदेव बोल्या आप
पे मुन्हे वैस्नव वाहाला ॥ हूं जह निद्रा
जेहेने धाउं रे ॥ तप तिरथ वैकुंठ तजीने
ज्यांहां वैस्नव होय त्यांहां जाउं रे ॥ टेक
अंमरीष प्रभु जने अति वल्लभ छे ॥ दुर्वासा
मन भंग कीधो रे ॥ में माहारु अभीमान
तजीने ॥ दश वार जनम लीधो रे ॥१॥ वैस्न
व गाये त्यांहां उभो सांभलुं ॥ उभा गाय
त्यांहां नाचुं रे ॥ वैस्नव जन थी क्षण नहि

अलगे॥ जपोनरसैंयोसांवुरे॥२॥ कीर्तन॥१०५॥ गकोरमाहाराजदामोदरजी॥ जेपेसारकरिअमारीरे॥ अंतरनोंरएषोनरसैयासाथे आप्पोहारउतारीरे॥ टेक॥ श्रीमुषबोल्पादामोदरजी॥ धन्यधन्यवैस्नवनीजातरे॥ अंतरगतसनासाहुमाहारएहूं वेचायोजननेहाथरे॥१॥ सखियोसरवेहरिनेवधावे॥ मुषबोलेजयजयकाररे॥ रमझमकरजाहरिपरवरिया॥ अ

पीमंहताजी ॥ नेहाररे ॥३॥ सुकसनकादि
कनारदमुनिजनवंदनीदेवतेत्रीसकोड
रे ॥ अंतक्षरहिनेजेजेकारबोलेनरसैंयो
जीसोहोडरे ॥४॥ पुष्पवृष्टिकरिसरवको
ई ॥ धन्यधन्यवैस्नवजनरे ॥ सरणप्रीतपरं
ब्रह्मसाधे ॥ बोलेभजंधन्यधन्यरे ॥५॥
अनेकभगतआगेउधरिया ॥ तमोहकृपा
करोमोरारेरे ॥ सोरठसघलोजोवामत्या
मोहिंरस्यांनरनारिरे ॥६॥ एणेजारजास्प

नेकांइनव्रजाणपु॥कीधोवैस्नवस्तुवा
दरे॥अंत्यजगत अंत्यजनोजायोए
मवोलेमजाउव्हादरे॥९॥मेरुसहि
तमहि दांनकरे॥नीत्यनित्यनाहेगंगा
तीरथ्यरे॥हरिजनसाथ्येवेषकरेत्यारेमे
लयोन्पवरारिररे॥७॥अएमाहांदांनआ
पेनिजमने॥धरेस्वभजपतपध्यानरे॥
तेसघदुततक्षणहोयेनिफल्लजो
करेवैस्नवस्तुअपमानरे॥-॥बोले

भजादेहो दिसततक्षण॥ येसतसेत्य
वेदवचनरे॥ जेवैक्षवस्तुवादकरे॥
तेहनेरुभाश्री ज्रुगजीवन्नरे॥ ४॥ क
लीज्रुगमांहेकरीणमानवीया॥ ते
हनुमन्ननवपतीजेरे॥ भणेनरसै
योसांभलोमाहारावाहाला मुन्हेंच
रणशरणराषीजे॥१०॥ कीर्तन॥ ॥
॥१०६॥ ॥ रागधन्यासी॥ सीपातसं
न्यासीमंडलीकनेंरकेहे छेनमोनर

सेयरनेपायरे ॥ अंधमधानेकांइनेम
जांणपुं ॥ आनंदकरेछेरायरे ॥ टेक ॥ सु
रश्रीमडेप्रभुनांकीधु रायकरेछे
विलापरे ॥ रांणीयोआवीने चरणेला
गी उगारो उगारो आमजी ॥ ॥ त्यारेरां
मानंदेराजाआप्यो माहारुंमानुं नहि
वचनरे ॥ असुरथेहाथेमृतुपांमज्यो
जारजातपनातन्करे ॥ ॥ त्यारेमेहेतोजी
केहेअमनव्यकाजे धन्यधन्यपरांमानं

दमुन्मरे ॥ अमने दामोदरजी येहार
आप्यो तेराय दामोदरनुपुन्यरे ॥ २॥ ए
विष्णु भग तने दोषना दीजे ॥ मुजने लो
गेकलंकरे ॥ श्री दामोदरराय नज्ञा
राषी रूं ठगारो घोरंकरे ॥ ७ मंडलीक
मेहेताजी ने केहेछे मे कोप्रा करम्कीतां
पीवातरे ॥ ष्णणेनरसैयो तुं अंसुरं अंश्
असुरनो तेजांपणे छे म। ताहारा मात
रे ॥ ५॥ कीर्तन ॥ १०५॥ रागदेवगांधार ॥

राजा आव्यो जनिता भणी ॥ कोहो माता

उतपत्य अंमत पी ॥ १ ॥ कुनती माता य

वांणी भणी ॥ सां भल पुत्र उतपत्य तु ज

तणी ॥ २ ॥ एसमे पु छ्वा नेमो कल्यो नि

मंकि वैस्य व न रसै यो पुरो ॥ ३ ॥ त्यु धर

म विषे प्रतिहार ॥ असुरनु मुख दीठु ह

वो तुं संतान ॥ ४ ॥ आवी मंडली कमे हे

ताजी नेनम्यो पाये ॥ दया करो रूं मंद

मती राय ॥ ५ ॥ प्रसंन प्रधा न जिनय ब

ऊंकारे॥ मंडली कनैईणे निस्तरणस्त
रे॥५॥ श्रीपातमेहेताजीनेनम्या॥ अं
मोमेहेताजीनेअतिघणुदम्या॥७॥ अं
मोअंज्ञानथयामाहाराजं॥ राषिदा
मोदरेजननी त्माज्ञ॥ न॥ श्रीममेहेता
जीनेप्रणामजकरे॥ ब्रह्मचारिविनय
ओचरे॥ ९॥ वैरागी रत्नीयात्वजथया॥
आजहरिजननामहिमा रह्या॥१०॥ न
रसैंयोकहेजपोहरिनाम॥ रायदामोद

सार नंर०
॥ ७५॥

७५

नेकरोज्ञणाम ११ ॥ कीर्तन ॥ १० ॥

राग आसावरि ॥ हरख्या लोक नगर न
सरव कोये ॥ धन्य धन्य वैस्नव जन अव
ताररे ॥ सौर ग संघलो चरणे लागो ॥ मो
हिरख्यां नर नाररे ॥ टेक ॥ सभा मेसीख
मेहेताजीने आपि छे ॥ वैस्नव मंदिर प
धारोरे ॥ धसी रमे चरणे ब्राह्मनां मु
मेम हिमा नां जांणी तमारोरे ॥ १ ॥ रम्मा
नंदद्वारकां पर वरिया ॥ कहे वैस्नव ना

नरसै
॥ ९९ ॥

मोहिमायेरे॥जे वैस्नव स्नु वेष जे करे
तेनिश्चेनरकपचायेरे॥३॥प छे नरसै
हीयो सखियोने केहे छे॥सरससुंदरी
योकरोगानरे॥रायेमंडली के सीष अ
पिमेहेराजीने नम्यासरवपरधांनरे
॥ संवत पंदरसेंहे बांहांतेर॥ १५७२
वरषेमागशर सुदसपतमी सोमवार
रे॥तेणे दिवसे श्री दामोदरजी ये मेहे
ताने आप्यो हाररे॥४॥ कीर्तन ॥ १०२ ॥

श्रीदामोदरजीनागुणगाता॥तेनर
दुषियानांहोयरे॥सदासामलीयोस
नेहजराषे सनमुखघरनेजोयरे॥टे
क॥म्हरखमूढहिंडेवलवलता॥नां
जांणेहरिनोमर्मरे॥रंरणप्रीतअमा
रिहरिसुंएमाहारोपरिब्रलरे॥१॥छें
ल्लछबिलोनेछोगाल्लो॥तेहनेकेहा
पेरेभजीयेरे॥मंडलीरांमानुमांनउ
ता॥तेहनेकेहिपेरेतजीयेरे॥२॥प्रीत

करिविनवेनरसैयोहूं संतकृपाये
पांम्पोरे॥ हरिजननी चरणरेणुमांहे
अनेकवेदनां वांम्पोरे॥ ३॥ हूं अज्ञांन
अल्पबुधमांहारि॥ देष्यादेषीयेवा
ल्पोरे॥ संतसमांगम अनुदिनकरतां
हरियेहाथजस्तात्पोरे॥ ४॥ जेजेजगदा
सभगतजन अविचल धरोतीलक
तुलसिकेरंमालरे॥ भणे नरसैंयोस
रवंथांथोवेलवगां ओछबिलाजी ॥ ७ ॥

नो विहारर ॥५॥ कीर्तन ॥ ११० ॥ निरषी
लोकनगरनाहरष्या ॥ धन्यधन्यवैष्ण
व अवतारर ॥ माहापतीत आंविचर
पोलागा ॥ करेहरषनरनारर ॥ टेक ॥ अ
मो अबुद्धिनेमी राजा अबुद्धि कीधा
वैष्णवनी तातरे ॥ स्वांमीसेवकमां हे
फेदनहि येवांणी वेदविख्यातरे ॥ ७ ॥
वासुदेवनावाहालावैष्णव तेसाथे
शोदेषरे ॥ साचुपासुसामधीया तु

[illegible]

तेज्ञविष्मनांटाल्नेलेषरे ॥४॥ हरिजन
सघलाहरषजपांम्या ॥ वरत्योजेजेकां
ररे ॥ भपणेनरसैयोधरोती ल्वकतुल्
सी ॥ गअो छबिल्वाजी नो विरहार रे
३ ॥ कीर्तन ॥१११॥ हरिनी भगतविना
जेजीवे संजनी ॥ बीजो अिछ अफल्वेअ
वतारवे ॥ तुलसिमाला तिलकपणपा
षे ॥ बीजाझांषोटासणगा ररे ॥ टेक ॥ द
ङामांसछंदरउषपांमी ॥ तेअकारज ॥

षरभाररे॥ देही धरिनेहरिनो दासनो
काहाव्यो॥ तेहनी जननी नेधीकाररे
॥ वैस्नवजनवाहालानांहि जेहने॥ तेह
नेकृपानहिनीरधाररी॥ नरसैंहीया
चास्वामी विनाश्नजनी॥ बीजा अने
कधर्मविचाररे॥२ ॥कीर्तन॥११२॥
सरसगांनसुंदरीओकेरां॥ वायेचंग
मृदंगनेतालरे॥ नरनारिसरवूमोह्यां
नगरनां जयजयहरिनदयालरे॥

टेका॥ सरिखियां नेकें गबांहोडी धरिने॥

मेहेताजी करे छे गांनरे॥ सोरवसरव

कोजोईरह्यु अकलचरित्र भगवांनरे

१॥ आंवी मेहेताजी मंदिर पोहोता नेह

रष्या सरवपरिवाररे॥ हारलेई हरषे

होंडा जीत्या॥ धन्य धन्य वैलवअवंता

ररे॥ २॥ एटले दामोदर मंदिर आव्या॥

ते मेहेतेजी ये वधाव्यारे॥ नागरिनाटप

मांहें डु वधावीउं॥ हारलटकता लाप्या॥

पो माहारा राग केदारो वेचाणो रे ॥ टेक
घणा दिवस मे पंथ निहाल्यो तो हे तुने
दया ना आवी रे ॥ माहारा सुषनो सम्मो
हडां म्मोल्पा रे मे सुरसेना बोलावी रे ॥
तमो मली ने हूं वश्या कीधो अवर कोणे
नव्यथा उरे ॥ मांन वार्ं कांहां न वाई कि
हे करुणानिध ॥ हूं तो वैसेल वहाय वेचा
उरे ॥ पांन वार रतन वार ॥ भत्से बोल्पा
मांहारे सुरसेना समुन कि कोयरे ॥ कु

परबाईयेवांणी प्रकाशी ॥ एभगत
समागमहोयरे ॥ ३ ॥ आपिआज्ञा अ
वनीश्वर वलीआ मस्तकमु क्याहाथ
रे ॥ कुअरबारचरणेजंर लागो धन्य
धन्यवे कुंगनाथरे ॥ ४ ॥ निरभेथईरही
सरवसारियो ॥ ईः भगतनो छुवेल
रे ॥ तुमप्रभुमांहारे अंतरनथी येसु
षसनातनकेलरे ॥ ५ ॥ भक्तभगव
तआदीसनातंनं ॥ श्री गोकुलंना

रायरे॥ झपोनेरसैयोहूं दिनउगगयो
तेसंत चरणपसायेरे॥६॥ कीर्तन॥
॥२१४॥ ॥इतिश्री नरसिंहमेहेतानो
हारमालासमाप्त॥ ॥संपूर्ण॥ ॥श्री
दामोदरार्पणमस्तु॥ ॥श्रीरस्तु॥ ॥

श्री कृष्णायनमः॥ राग बालसो॥

संतो सुंण जड नारी हो॥ कहूं येक
वात षसली॥ तेरो जनम बिगारो हो
षियाजी कारा हनां चंली॥१॥ तेरी जा
त न जांणु हो रसी कराय रा वं दु
पा॥ तेरी ममता बांढी हो नपायापी
उं अपणा॥१॥ तेरी मायाप बलहो घ
पोरा छंद करे॥ अंती नाचंन चावेंलों
नटवर वेष धरे॥ मन मुरत कंदरीया

हो॥ जा ओगी को २ पदशा॥ तैं तोना
अनां जांण्या हो॥ घटमां आय बसु
३॥ तेरे तीनों रसीया हो॥ पल छिनु सं
ग करे॥ पांचां सु राची हो पचीसां सु
संग करे॥ तेरैं रजगुण तमगुण हो॥
सतगुण चित नां दीया॥ तेरो जनम
विगुचो हो॥ संतन का संग नां कीया
५॥ चढ गगन मेहेलां मे हो॥ स्यांहां
तैं [illegible]नी सु बसे॥ स्यांहां अनहद बाजे॥ ६२॥

होइ कमल सो दरसे ॥२॥ त्यां हां फेरि
सरणाई हो दाव दसण कार करे ॥
त्यां हां अमी रस बरषे हो अखंड त्यां
हां धार झरे ॥३॥ त्यां हां ईगला पिंगला
हो ॥ सुषमना संग लीयं ॥ त्यां हां फुली
फूलवाडी हो मनोहर चित्र दिया ॥४
त्यां हां दोउ मारग हो आगे येक रूया ॥
पंथ अगम अगोचर हो ॥ पो हां चेका
संत सुआ ॥ देखो अजब तमासे हो

गुरुमुख बातसुणी ॥१०॥ सख धोषा
भागपाहोसत्पामोहे आद्यघणी ॥१॥
जगमांॅअजुआत्नाहो सोहंगमचंस
रदखै त्यांहां तोदासकबीरजीहो
अनीरसरंगभरे ॥११॥ पद ॥ १ ॥

॥२॥

श्री कृष्णाय नमः ॥ दोहोरा ॥ त्रि
व सुंत पदं प्रणमो सदा रि धि
सिद्धि निधि देइ ॥ कुमति वि
नाशन सुमति करि मंगल
सबै करेई ॥ १ ॥ अलप अरत
अलप गति किन कुं न पार को
नार ॥ जोरि जुगल कर कहत
है विमति सार ॥ २ ॥ श्री

सुत नैन सुषमा षाकी यो विद्या

स ॥ ५ ॥ अथ नाडी परीक्षा ॥ दोहरा

प्रथम जसा लडिन कहो देषग्र

थम तिसो य ॥ फुनि श्रावो अन

मा कपे जैसी मम मति होय ॥ ६

करि अंगुष्ट मूल ही देष फुन सा

सकार ॥ जान कु सुष दुष जीव

नेति निरंकार कु विचार ॥ ७ ॥ श्री

हिपित्तकुनिमध्यकफुअंतप
वनजुप्रधान ॥ त्रिविधिनसाल
ल्लिनंकहौंजानतुवैद्यसुजान
॥ ८ ॥ मैंडककागकुलिंगगति
पित्तनसाइहिजाई ॥ हंसमयू
रकपोतकफ ॥ नागजलोकावा
ई ॥ ९ ॥ तितरलवाबटेरगति
सोधमनीरुनबातं ॥ [illegible] तहु

योकह्योखपान॥ मारुतजंकुन
हैजानं॥२५॥अथपित्तकफव
युकोविचार॥दोहरा॥त्रिसंग
मजबीजनाश्रीतलसलिलस्ना
न॥भोजनमधुरसुगंधतांकर
कोपपित्तहान॥ ॥कारकसे
लातिककटुतप्तउदकमुपवा
स॥ बवनबिरेचनसेदफनि
होईकफनात्र॥ तेकू

वैन
२

दक्षवंतेतलइवमर्दनमेलरारी
र॥ सुरापानसेकेदहनेइन्हते
जांय समीर॥१८॥ अथ साध्यल
छंन॥ सोरठा॥ होयत्रिबाजि
सहीनकरपदनासातप्रही॥
मडुरसनापरबीन श्रुतःलसुत
नोकेकहे॥१९॥ चोपई॥ इंद्रीश्रं
गुरहेचेतन्य॥ सुबनिद्राश्रांत सु
प्रसन्न॥ [illegible] नंद्रिमांवंचनसुनेन्ये

रुकैदे ॥ स्वाद गंध सब के गुन गहे

बिनु प्रस्वेद जा को ज्वर होय ॥ स्वर

उस्वास हीन कफ सोय ॥ करकं

चिकीत्सा ता को जान ॥ सो नर

जीवे कयो बषान ॥ २५ ॥ अपस्मा

र [illegible]लंछन ॥ सो रोगा ॥ जाय सु भा

रुं ता [illegible] त गह पीत होय कफ गहे ॥

कप [illegible] आवे जब कं [illegible] तां से

जासु ॥ शीशातसुजाकोरहेजमपुर
गोकोबासु ॥ २७ ॥ दर्पनघ्रतनेज
तेलमेछायादेषकुंभ्रानि ॥ त्रिशूर
रहितनबदेषियै । नासुपरूमहि
जानि ॥ २४ ॥ मजुनकीजेतीनश्रेंग
करमंदरद्रुदेनिहारि ॥ सुकहीजि
सुनाकालसोमतेकलोयविचा
रि ॥ २९ ॥ करविचारमनीकंबुझे

वैजं० ८ ॥

श्रावेकंठनगंध ॥ मजलेज्ञाछंत
नासंकुय तासजेतजमफंद ॥ २ ॥
श्रमकाजचक्रलिप्यते ॥ श्रादि
जुश्रंतिमगमधिमूलसमसोय
तंथतहंजविनामधरि इहि बि
धिनामजुहोय ॥ ३ ॥ रोजीतसु
जुहोयफ्रकजापजाहोजंषा
ष ॥ सो हिव कल्यो किंचारकेका

लचक्रयरिनाम॥२५॥इतिपंडित

केशवराय्यपुत्रेनेनसुषविरचि

तेवैद्यमनोत्सवनाडीपरीक्षावा

तपित्तकफकोपनिदानसाध्यअ

साध्यलक्षनकालचक्रनामप्रथ

मो ऽदेशः॥१॥श्री॥अथज्वरलक्ष

णलिख्यते॥दोहरा॥ज्वरउपदेहि

काविंदुयहमक्षीयांस्वांसस्य

नै.नि.
५

तौसार ॥ बंबन अरु चित्र गने द्रवे
रोज्वरद्रवाल करूण सुप्रकारा ॥ १
अथपित्तज्वरलक्षनलिष्यते ॥ दो
हौरा ॥ मूर्छी त्रिषा प्रलाप फुनि
शिरपीडा त्रिम मचित्त ॥ नेत्र दाघ रु
ढुंगा बदन ए दोय लक्षन ज्वर पी
त ॥ २ ॥ अथ कफज्वरलक्षण ॥ का
स श्वास सर्द्दी रोमांच गुरु देह रा नि

ड्रा शीत ॥ बवन अरुचि मुष मधुर

ता कफ ज्वर लछन मीत ॥ ३ ॥ अथ

वाय ज्वर लछन ॥ शिर फेडु रोमां

च भ्रम सीत कंप जंभाय ॥ मोह

शितल जुक षाय मुख. ऐ लछन

जु बाय ॥ ४ ॥ अथ सम ज्वर लछ

न ॥ और गा ॥ दांघ सोष परलाप

अस्थि पीडा शिर व [illegible] भ म [illegible]

नेत

॥ ससामंजेतापा॥ कारकुउघायत्रि
चारितिहि॥५॥ अथअजीरणनु
रलक्षणं॥ दोहोरा॥ बवनउदरउ
षबकुडकारहोयजंनासु॥ जीरण
जुरलक्षणकहेदेषीग्रंथसुष
कोस॥६॥ अथवेदज्वरलक्षणं
नीझाजुंनजफुटतनहोयअंग
ष्वेद॥ सोसुवैद्यविचारि

केसु लक्षण ज्वरं भेद ॥ ७ ॥ जिमन
बेगुन अत्राक्ति तनु उदर पीर फु
टत अंग ॥ ए लक्षन ज्वर द्विषिके क्रोध
सु ग्रंथ प्रसंग ॥ ८ ॥ अथ कालज्व
र लक्षण लिष्यते ॥ दोहोरा ॥ धूसरि
तन सु स्वेद नित कंप दरी तल
होय ॥ ए लक्षण जुर काल के ति
महि तपायन कोय ॥ ॥ अथ पक्ष

छुधादर्शनचुर्गी ॥ चौपई ॥ सोंठक
रायफलहकरमल ॥ काकडासिंग
कूटकचूर ॥ महजहवीगिलोय
आंबला ॥ सालपुषणीहरईपीपरा
मीरचवकलौंजीअहिफान ॥ पित्तप
पडुपत्रअस्थान ॥ अंगरमासांअ
रुकुडसिलाय ॥ जोबनवालाम
बीषाय ॥ तजपत्तीसरकुरहारहिता

नेद्र:
१२॥

ने॥ मोथपरोजजकायनआन॥नि
आअन पापीपरिमृजन॥ एओपूथ
मेजकुसमंतजन॥जैपाखिक्तिराय
तावान॥ सबओपथध्राआयतनतुए
तेआन॥ इनसबहीनकोचूंरनक
रकु॥ नामसुदर्शनजघुतिहिधर
डुं॥ चुरएपीजेजनमहिद्यांजी
आगेजुरंभांमहीननकाली॥१२

चौपई ॥ दोष मोह तंद्रा तन जाय ॥ पी
डे रोमों का मैल नसाय ॥ हियगद त्रि
षा मूलु सब जाय ॥ सन्यपात एक द्रि
न रहाय ॥ भ्रम जु उचकी रोग नसा
य ॥ कास स्वास की पीरा जाय ॥ रोग औ
र अनेक को नहि जान ॥ मैन कवि यह
कह्यो बखान ॥ ४ ॥ अथ महा ज्वरां
कुश लिख्यते ॥ दोहरा ॥ सो ठ मीरं

वैनं०
॥१९

थें ओरपीपरे टंक आव परिवासं ॥

गंधक विंपारद कहो दो घरं कै ए

आन ॥१४॥ बीज घत्तूरे टंक द्वै पी

स कुओ बधसो य ॥ रस अ्रद्र कै सो

मर्दकैं करि गोलि रत्ति दो य ॥१५॥ जो

लिपाजें प्रातउ भिरसं अ्रदरक सो घा

लि ॥ तांप पित्त कफ वाय को नाश हो

यत तकाल ॥१६॥ तीजो दुजो नित्यको

चौपाई ज्वर जाय । सूक्ष्म विषम सुरी
तज्वर उदर व्याधि नर हाय ।। ४३ ।। म
हा ज्वर रोकुं ना नाम कहि पंडित जी
ज्ञ भान । वैद्यमनोत्सव नाम ति
हिं भाषा कीयो बषान ।। ४५ ।। अथ
सिद्धजु ज्वर रोकुं नाशि पते ।। चौपै
सीपत्र स्मरांक ।। ६ ।। हरताल रांक ।। ७ ।।
निलापोष्यार्दांक ।। ८ ।। कुमारस सो

नैनं
१४ ॥

धरत्नप्रहर ॥ अंधमूसकरगज्जैत
टहेय प्रहर च्यार पावकरहे ॥ गौत
नुहोयत नेकु ॥१७॥ दोहोरा ॥ एकर
तिप्रमान कुनि षंडु सोंदीजे जासु ॥
गातुउदधकोपमदे यहीयसनेज्व
रनासु ॥ २० ॥ कह्योज्वरांकुशचंवर
गमतिपिंडि तलैकु विकारि ॥ नास
हिरोगअनेक विधि सिद्धिप्रगर सं

मा॥२१॥ अथ ज्वरघ्नीगुटिका॥ दोह

रा॥ मौ पर मन सिलनिंबफल॥ अर्क

को यलेपाय॥ गोली कीजे पीसके ता

प त्रिदोष मिटाय॥२२॥ अथ पित्त ज्व

र को चूर्ण॥ सोरठा॥ पित्तपापडा औ

नि जल सो दीजे त्रासिके॥ टोर ए क

परिवान॥ दाघ पित्त ज्वर नास है॥२३

चोपई॥ जो ज्वर तन तालों मो पंचानि

मेद पित्त पापडा गनि ॥ सोंठ अरु नीर
नीर संु लेकुं ॥ दाघ पित्त ज्वर नाशक
रेकु ॥ २४ ॥ अथ कफ ज्वर को नाश
दोहरा ॥ सोंठि सिर च [illegible] रु काय
फल पीपर ताहि मिलाय ॥ नासनु
नीजे नीर संु कफ ज्वर छिन मह जा
य ॥ २५ ॥ अथ बायज्वर कहते लक्ष
सोरठा ॥ सं. विसोदर पाय पीपर मीर

…कीए …तापद …
जोति॥ … ॥ अथवायु विन…
रक्…पाय॥ दोहोरा॥ …
क्रिराथ… पिल पापरा… ॥ …
रकु …थकुनि॥ एस…
…नि॥ …॥ जोयह…
…ल…दीं…नासु॥ …नि…
…अथ होहि… रनोस॥ … ॥ अथ

वैद्य ८
र.त्र.

सो म कुडापती इंद्र जव मो परा सो भी
लाय ॥ काथ जु करि के सो जीये अति
सार थ जाय ॥ ५७ ॥ चोपाई ॥ सोचन वा
[illegible] कुडापती स ॥ मोथा वे जु समक
रि पीस ॥ पाको क्वाथ जु करो मिलाय
[illegible] अतिसार जु जाय ॥ ५८ ॥ अ
थ अतिसार कह गुटिका ॥ दोहरा
लोद्र इंद्र जव मोचरस मोथा बिल्व सु
धाय ॥ दीजे जल सो गुटी कर अतिसा

कुमास्वायमिलावकुमा॥समपीसिञो
षवि काषकीजेआतउवीकेपीजीये॥
श्रामम्हजञरुचिसंग्रहणीनाञाइ
नकोकीजीये॥ ५४ ॥ इतिपंडितके
सवदासपुत्रनेनसुषविरचितेवै
द्यमनोत्सवजुरसंनिपातञतिसा
रसंग्रहणीप्रतीकारनामद्वितीयस
मुद्देसः॥ २॥ अथबवेसीरोग
चिकीत्सालिष्यते॥ ञ्लरणगुटिका

वैद्य०
१
२५९

ब वेसी कह ॥ सो होरा ॥ एक मिरच ब वि
खि सोंव फुनि चित्रा व्या ठ पानि ॥ प्र ए
पोडस्रा नाग पु नि चूरण कर कर जानि
॥ विगुण ते कु गुड जाप कों गुटिका
कर ऊटां कदोय ॥ पेट अफारा गुल्म गु
ड़ नाशें ब वेसी होय ॥ २ ॥ अरंड चित्रा
इंद्र जव सुंठि सैंधा बिड चूरण पीजे
तक्र सों रोग बवेसी पेट ॥ ३ ॥ छूनी बवे
सीक हक्षो मध ॥ सोरठा ॥ कुहवा लीजे

आनि घृत जवैं गमूं पीजीये ॥ टंकसा
त पर आान रकब बे सीनासें रहे ॥ ध
रोग बबेसीं कहू चूरण ॥ दोहेरा ॥ भू
रण वच ग्रह मुसलि ॥ कूडां सों ठिसम
भाग ॥ पीसी छाड सों पीजीये रोग ब
बेसी जाय ॥ ५ ॥ भगंदर रोग कहलेप
॥ दंति हरद मुआंवरे ॥ पीस दूनी रसी
लाय लेपजु कीजे प्रातउ वी रोगभ
गंदर जाय ॥ ६ ॥ अथ तिलाई आनि

वैद्य
२५

के त्रिफला खार सर्व संयोग ॥ ताघ सिद्ध ता व
डूं ज्ञानके जाय भगंदर रोग ॥ १ ॥ अथ
भगंदर कहै ॥ सैंधा सों बिजूर दर फ
नि बटफल बचु गिलोय ॥ जाय पत्र घ
सि घाइ ये नास्रा भगंदर होय ॥ २ ॥ अथ
गुल्म रोग प्रतीकार लिष्यंते ॥ दोहरा
सैंधा सोंचर सों वहिंग कै टूं लोन फ
लित्रा ति ॥ आमि सापी पर अजमोदा
जवषार विडंग समान ॥ ५ ॥ ईनका

सुरण कीजीये घृत सों षाय मीला
य ॥ सो नासै सूल विसूचिका अरोच
रुचि सब जाय ॥१०॥ अथ आमवात
रोग चिकीत्सा ॥ सोथ कहु लेप ॥ सर
सो सोंठ सुहाजना ॥ विस खपरा सत्र
रहार ॥ कांजी सहित जु लेप करि सो
ज विषादि नेवार ॥ ॥ अथ विष
जारि चूर्ण ॥ आमवात रोग कहु
पीपरि पाठकरा दिजा नि सोठनु

कहदीजे ॥ दोहोरा ॥ सोंठमिरचअरु पीपरी अजीताहिसीलाय ॥ पीसपपीये अलतसों ॥ सूल रोग नरहोय ॥ २५ ॥ अथपांडुरोगकमलवायप्रतीकार ॥ क्राथपांडुरोगकहदो होरा ॥ त्रिफलाकडुकीरामताबासानिंबगलोय ॥ क्राथपीऊंसहतसोंनासपांडुकाहोय ॥ २६ ॥ त्रिफलाअर

नै०ल०
२५

॥ नीआं वरे जो हचुनजु मिलाय ॥ चाटे मधु घृत पाय के पांडुरोग ... जा य ॥ २१ ॥ अथ क मलवाय कह अवले ह ॥ दोहरा ॥ जो हचुन त्रिफला कटु दोना रजनि घालि ॥ घृत मधु सो अव चाटिये ॥ कमलवाय कह टालि ॥ २२ ॥ अथ अंजन कमलवाय के कह ॥ दोहरा ॥ गेरु हरद ... आंवरे ॥ कर अंजन नय

नाय ॥ कमलवायका नाश होय ॥ म
सुरमच्छ्रदोषाय ॥ २८ ॥ अथ छर्दिरोग
उपचार चूर्ण अथ छर्दि रोग कहे ॥ दोहा
रा ॥ असगंध सौं वजु पीपरे लवंग
पीसी पाय ॥ तप्तनीर सों दीजीये छ
र्दिरोग जु नशाय ॥ २० ॥ अथ गुटिका
अथ छर्दिरोग कहे ॥ दोहेरा ॥ अर्कमू
ल अरु लवंग फुनि पी[illegible] समंक

नैम.
३१

रिश्रानि ॥ गोली पाजे प्रात उठि होय
हाई की हानि ॥ ३१ ॥ अपरु ई लेगकु
ह चूर्ण ॥ सोरठा ॥ त्रिफला सों व विडं
ग मिरचै कृष्णा जु मोथ ही ॥ पी परि
मूल न बैंग देवदारु त्त जा ई ची
३२ ॥ इति श्री पंडित केशवदास सु
त्रेनेन मुषविरचितायां वैद्य मनो
त्सव ......जगंदर गुल्म आम वात

कम मूल पांडुरोग कमलवाय ह र्ष
रोग छती कारः नाम हती योसमुद्देख्र:
३ ॥ श्री ॥ अथ हीच की कहनास ॥ दो
होरा ॥ दीटम बिकिलापरस पीमद्
है नोपाय ॥ नासजद्दीजे पात ह गै
ऊंच की बङुरनत्रास ॥ १ ॥ अथ ही
चकी कहनूर्णी दोहोरा ॥ मिरचे
मीमरिलवंगफुनि जि ेर कींघा

नैन॰ ३१

लि ॥ अंध सोपा जैं प्रातउ ठि हीच कौ
पीशटालि ॥ ४ ॥ अथ हीच की कद्धृणी
दोहोरा ॥ मनसिल हरद जु आतिके
पीस कुसमकरि जोग ॥ चंदन जु थ
नी दीजीये ॥ नास ही ही च की रोग ॥ ३
अथ छर्दि रोग प्रतीकार ॥ दोहोरा
चंदन मो थई जाई चौ जा जा कणा
लवंग ॥ गिरी अरु कमल फल

ग जकेसर जु प्रियंग ॥ ४ ॥ ईन कौ चूर

रण कीजीये मधु मिसरी जु मिलाय

प्रात समै जब चाटीये ॥ छर्द रोग जु

मिटाय ॥ ५ ॥ छर्द रोग कफ हू अवलेह

[illegible]रवा ॥ लौंग जासि त्राल वंग ॥ कमलें

बीज अरु सु लाइची ॥ खादे मधु के संग

छर्द रोग का नाश होय ॥ ६ ॥ अथ स्वा

स रोग प्रतीकार ॥ चौप[illegible] अथ स्वा

नैन:

३२

सरोगकंकहचूली ॥ सोंठपीपरकोकडा
सिंगी ॥ पुष्करमूलकचुरनाडुंगी मो
थमिरचजलततप्रजुलेकु ॥ महास्वास
कानाद्राकरेकु ॥ ७ ॥ स्वासक्कासकह
चूली [illegible]रीपाछंद ॥ कडीआईपुष्क
रमूलजानि ॥ बासाअरुसोंठिकुल
थवानि ॥ एपीसपीयेसंगतप्तनीर
तबंस्वासकासकीजायपीर ॥ ८ ॥

भगोजी षासकी ॥ दोहरा ॥ मोथ ॥ व
हे पीपरे ॥ काकुडासिंगीजानि ॥ आर
गीन कुआरक्षिल ॥ एसमपीसकुआ
नि ॥ ५ ॥ गोलिदीजे नीरसों टांक एक
सम सोय ॥ निश्राजु सुषमेराषीये ना
स षांसकी होय ॥ १० ॥ बासा सोंठमु
थी पीपरे एसमपीसकुआनि ॥ गोलिकी
जे सहत सों होय षासकी हानि ॥ ११ ॥

जैन०
३३

अथ गृहे सिधां सिक ह चूर्ण ॥ वा सा
के वज पीपर वच कढाई पाय ॥ पी
स पा ये जल तप्त सो षां सिधां सिजा
य ॥ १२ ॥ अथ मंदाग्नि प्रतीकार चूर्ण
मंदाग्नि कह ॥ दोहोरा ॥ पीपरि निबी
हरितकी ॥ सुंठि संचर पाय ॥ तप्त नी
र सों पीजीये ॥ मंदाग्नि जु मिटाय ॥ १३
अथ मंदाग्नि कह चूर्ण ॥ दोहोरा ॥ सें

भारिवाजुपीपरे॥ औफुनिचित्राधा
लि॥ पीसपीयेजलतपुसो मंदाग्निक
हटाजि॥ १५॥ अथफ्दुधाकरगुटिका
होहेरा॥ त्रिकुटात्रिफलालौंनहिं
ग॥ अरुअजवाइनमेलि॥ समगुड
गोलिकीजीये मंदाग्निकहपलि
२५॥ अथचूर्णमंदाग्निकद॥ चोपाई
सैंधासोंचविडंगआनि॥ त्रिफलाति

जै नं
३४

बीजसंग्रगानि॥चित्ताहिंगऋजवाय
नजानि॥जीरिदोनोनारदमानि॥इन
सबहिनकोचूरएकरकू॥तिनपुरै
गुनिबुकीधरकू॥टेकएकजोप्रांत
उविप्राय॥मंदाग्निन्हिनमांहिपर
य॥ध॥अथविसूचिकाप्रतीकार
सोरठा॥तेलतिलीकोआनि करप
दमर्दनकीजीयं॥नासविसूचिका

जानि सिद्धियोगपंडितकहै ॥ १७ ॥
इतिपंडितकेभावदासपुत्रकहैतसुष
किरिचितवैद्यमनोत्सवे ॥ हिकाछंदि
कासस्वाँसमंदाग्निविसूचिकारो
गप्रतीकारनामचतुर्थसमुदेसा
॥ ४ ॥ अथअंडवृद्धकहिअवल
ह ॥ दोहोरा ॥ जीरसेंधाहिंगले तेल
कटुमहिपाय ॥ जेपजुकीजेप्रातउठ

नं० ३१

अं र [illegible] जु मिराय ॥२॥ अंड वृद्धकं ह

चूर्ण ॥ [illegible] ॥ त्रिफलाच्चरण कीजे

ये घृत मधु अम हि घालि ॥ प्रातजु पीजे

सात दिन अंपसोपकहलालि ॥२॥ अं

डवृद्धकं हओषध ॥ दोहरा ॥ एरंडते

ल विहालि फनि ॥ पय घृत के संयोग

प्रातजु कीजे सात दिन ॥ नासे अंडज

रोग ॥३॥ अंडवृद्धकं हलेप ॥ जीरा अ

नैन०
२९८

सो सम समकरि ओलि ॥ चूर्ण पीजी मे
जे स[illegible] थोलि ॥ कुष्टरोग नासे तत
काल ॥ १४ ॥ अथ [illegible] कुष्टरोग कुह
छंद ॥ त्रिफला आम जिवगिलो य कूट
कौंच बनि सा तुजानि ॥ होय बचदा
रु हलद विडंग वासा एस मान जु स्री
नि ॥ [illegible]पी [illegible] चूर्ण करहु विध सो पी
जीजे सालि मुंग ॥ कुष्टरोग जु पवल मो

जे ॥ नासकडूअंग ॥ १५ ॥ अथमंजिष्टा
दिंकाथवातरक्तकहं ॥ तोजेरा ॥ मं
जिष्टात्रिफलाकडूरजनीनिंबगिलो ग
य ॥ देवदारूंवचंपीसकेंकाथजु
कीजेसोय ॥ १६ ॥ प्रातउठीजोपीजी
येवातरक्तनरहाय ॥ अथकमंड
रुमामगर कंकुकुष्टगिलोय ॥ ७ ॥ अ
थस्वेतकुष्टकहलेप ॥ रुषेसरलेंद

गुंजाबीज करवचचीता ॥ ए सम
धी मक्षोड़ेमीता ॥ ले पुजु कीजे कोजी
श्रानि ॥ स्वेतकुष्ट नासंत बजाति ॥ १५
स्वेदकुष्टकहद्वितीयलेप ॥ दोहोरा
मनसिजचित्रकबावंची पुवाड़ ॥
स्मभोजाय ॥ कोजिसोंजबलेपीये
स्वेतकुष्टनहाय ॥ १६ ॥ अथ केंदु
कहद्वुणी ॥ दोहोरा ॥ हरदबावची

गीदड ॥ अरु ओंवरे मिलायकै ॥ दंकेदी
मुगोमूत्रसों पीवतकें कुष्ट जाय ॥ २ ॥ अ
मृतामकहलेप ॥ दोहरा ॥ सिरवेत्र
कुसिंदूरफुनिमहिंषिघतसंयोग ॥
मांथेलेपकुकींजीये ॥ नासेपामांरोग
२१ ॥ अथकेंदुदांद विचर्चिकोंकेहल
प ॥ दोहरा ॥ गंधककेबोधबिंडोंफुनि
कुंवसिंगरफजानि हरतपवांससिंदू

दोहोरा ॥ चंदन कूर संना तु पाय
के मजु शिवा बीज सम भाग ॥ लेप
जु कीजे जल सुं घसि लि ॥ लगा वे पा
कह पुलस हि टालि ॥ २६ ॥ अथ पिंन
रोग प्रती कार ॥ चोपाई ॥ कदली पा
त हीन समकरि ता मदि हे दा मेला
य ॥ लेप जु कीजे बीरसु पिंन रोग न
रहाय ॥ २७ ॥ लेप पिंन रोग कहे ॥ पा

नै.न.
५१

घरिषयाछेद ॥ वेदनहरत्तालकपुरगो
नि ॥ सुहागामूलीबीजऋआनि ॥ जेनि
रीरसोलेपजाय ॥ नैपिंनसेंगत्ति
नमहिपुरायः ॥ २८ ॥ पंनरोगकूह
लेपः ॥ सोरवा ॥ गंधककेदनश्रानि
नीबुरसमोलेपीये ॥ दिवससातप
रिवानपिंनरोगंतंननोरहै ॥ २९
अथनारूयारोगप्रतीकार ॥ अर्थ

दृग्धकरी मुक्तिका ॥ दषीसोपीसे मो
मु ॥ निजु ओषध पंडित कह्यो ॥ नाश
नारुवाहोय ॥ २० ॥ अथपत्रा स्वंधात
कर ओषध ॥ काकजंघाको रस ले
पी सदे यतिहिं काल ॥ पीटारकचंका
हं कुनि ॥ एतेना सहीतत्तकाल ॥ २१ ॥
इतिश्री पंडित्त वैद्यकेशवदास पुत्र
नेनसुष विरचितेवैद्यमनोत्सवे

जुलाबघृतसोंमीलाय॥ सोवातव्या
धिछिनमांहिजाय॥१॥ अथचूर्णवा
तरोगकंहदोहोरा॥ जेगसंगोत
जेसरा मुंडिताहिमिलाय॥ मु
पाजेटांकुवे वातरोगनरहाय॥२॥
अथवातरोगकंहगुटिका॥ चोपाई
पीपरचीताअसगंधजानि॥ चव
कविडंगअजवायनआनि॥ सोंठ

न होय ॥ ४ ॥ अथ लघु विषगर्भ तैल

नाय कहु ॥ चौपाई ॥ मीठा तेल सेर

एक आनि ॥ तुलसी के रस जानि

गुंजा बीज धतूर बीज ॥ टांक पचा(?) च

सब लीज ॥ विधि सों तेल जु कीजै आ

नि ॥ लघु विषगर्भ तैल यह जानि

मर्दन देही कीजै ताहि ॥ वात रोग

चौरासि जाहि ॥ अथ पित्त रोग प्रती

कार ॥ अथ चूर्ण पित्त कहु ॥ पाधरी

लें ३०
मधु ॥

गोखुंदे ॥ इलाची कपूर उसीर बानि

श्रोंवलेचंद नत्तू लश्रोंनि ॥ पीस तुं पी

वे जलमिलाय ॥ तो पित्त को पंछिन मां

हिं जाय ॥ १ ॥ अथ लेप दाध कहु ॥

दोहोरा ॥ बेली पत्र के श्रांबरे ॥ चंदन

छेड जुमिलाय ॥ जल सों लेप कुचर

न जुग ॥ दोंच व्यंपो जु मिलाय ॥ १ ॥ अ

थ छर्द तवांकी डाह चूर्ण ॥ दोंहोरा

पी सिंधु हाराकमल फल श्ररु ईला

ईचीपाय॥सीतनीरसोंदीजीये छर्दि
नुवाकीजाय॥८॥अथकफकोप्रती
कार॥कैसरमिरचेपीसीकरिमाडं
गीलेपाय॥मारोतावानवगफुमि
एसमपीसिनिसाय॥ ॥पानीसोंजो
पाईजे टोकअदउविपात॥कफपा
सीअरुस्वासभ्रम हीपरुईकोघा
त॥१०॥कफरोगाबालहलूणमें॥ दोहोरा

लि ॥ केवजुवाकोजेपकरि ॥ कविंदगा
रीरापेलि ॥१२॥ अथमुषरोगपतीकी
रचूर्ण ॥ मुषपाककेकह ॥ तपषीरइला
पचीसेतकथजुरलाय ॥ जुषमेमेल
ऊंपीसकें ॥ वहमुपाकजुमीटाय ॥१३॥
दंतरकप्रवाहताकूअौषध ॥ दोह
रा ॥ रसवोसूकोसहंतकूनिमप
कजुदोनोकोय ॥ प्रातकूचाटेसात
दिन ॥ दांतरकनहीहोय ॥१४॥ दंत

तारेगा ॥ छठीरातिलत्रयाम ॥ जीरास
रसोपीतकूनि ॥ पीसकूलेपकूआनि
मुषकीछाईनरहे ॥ २० ॥ छाईकूहवे
प ॥ दोहोरा ॥ सैंधाजोदिजुहरदुकूग
ए-औषधसमकनागमौ बुरससोंलेपे
येमुंषकीछाईजाय ॥ २२ ॥ अथनासि
कारोगपरीकार ॥ दोहोरा ॥ दूबकमुं
भहरीतकी दाडिमफलजमिलाय ॥ सीत

नीरसोंनासदे ॥ रकतगमनसोषाय
२२ ॥ ओषध्यपीनसरोगकह ॥ सोंठ
मिरचअरुपीपरे ॥ गुडसोंषाजेआ
नि पीनसबेहरसीसदुष ॥ नासईन
हींकोजानि ॥ २ ॥ अपनासपीनस
कहदोहोरा ॥ मिरचेअ बंदाल
फलपर मितलिकरमेलि ॥ नासनु
दीजेनीरसोंपीरापीनसपलि ॥ २४ ॥

नेत्र०

५८ अथ नेत्ररोग प्रतीकार ॥ अथ लेप ने
त्र रोग करु ॥ दो होरा ॥ रसवत लोंन
हरीतकी गेरु हलद मीलांय ॥ पल
कउपर लेप करें नेन रोग ज्यु मीटा य
२५ ॥ अंजन नेत्र करु ॥ कांतिकरु स
अरु ज तकुनि ॥ मह दीर स संयो
ग ॥ लोचन अंजन कीजीये रहे न के
ही रोग ॥ २६ ॥ अथ अंजन रात्रि अंध

कह ॥ दोहरा ॥ सुरमाअरुरजजुगल

करितीनोसनीबंध ॥ नैननीअंजन

कीजीये होयजजानिसअंध ॥ २७ ॥

सावनजेसेबालको तिलअंजननैय

नाहि ॥ जाजाकोजानिसअंधफुनि

निमषबीच नरहाय ॥ २८ ॥ अपप

उवालकहदेप ॥ मिरचेजीरुलोण

गुडएतीनोसमआन ॥ जबलोले

नैनं०
४५

मधुउ केस्सयपउ बालजान ॥ २८ ॥ रग
डा नेत्र रोग कहि ॥ दोहरा ॥ सैंधा कडु
वा तेल पुनि ॥ कांस पात्र महिं घालि ॥
कारि रगडा अंजन कछु नैन पार कहि
टालि ॥ २० ॥ सबल वाँय कहि अंजन
दोहरा ॥ पारा जसत संग मिसरी ॥ मो
ति मुंगा [illegible]नि ॥ [illegible]रांक फुनि जी
जीयें इक कांहि पवान ॥ २१ ॥ करम

द्रसानसुरुचाकसुं ॥ साहीईनमहिला
लि ॥ त्रं वेत्रयटांकजुलीजीये ॥ कांस
पात्रमहिडालि ॥ ३२ ॥ वेलिपयसोंपी
सके द्रगश्रंजनजुकरैउ ॥ सबलेवा
यकानाशहोवै ॥ द्रग्धनातपपहेउ
३३ ॥ सबलनायकारगला ॥ दोहोरा
मतकलीबाजनसफुनि ॥ नक्षिपाथ
श्रानि ॥ सीपांचुनाफटकडीसांग

स्केनसमान ॥३४॥ कोसापावमहि
रगडीये ॥ घतगोकाजुमिलाय ॥ निशि
अंजनजोकीजीये ॥ मंवलवीयनरहा
य ॥३५॥ अथपोटलीनेत्ररोगकेह ॥ हो
होरां ॥ जीराकाहिफकडीत्रिफला
लोएपायं ॥ रसनततहाप्योहलदफ
नि ॥ ताममहजोदमिजाय ॥३६॥ एअोष
धसफआनिके ॥ करक्रुपोटलिपीस

सर्वपीर कौ नाश होय नैंन निर्मलाई।
स॥३७॥ अंजन तिमर कौ लापारावा
य कह॥ दोहोरा॥ सुरमा सैंधा शंष
फुनि॥ मनसिल त्रिकटु आनि॥ कांति
फला अरुमिसरी॥ सागर फेन समान
३८॥ अंजे छेलि दुधसें तिमिर रोगन
रहाय॥ फौलाषो ... य फुनि नयन
पात्र जुमिटाय॥ ३९॥ कर्णीप्रती कार दो

नैन.

५१

॥ दोहरा ॥ स्तकाल सन तिल पत्र रस ॥ कान
बीच सो पाय ॥ बहरा पीरा दूर दुष ॥ ए
तै रोगन स्राय ॥ ६० ॥ कान रोग का औष
ध ॥ दोहरा ॥ आक पात स्रहि लसुन घृ
सिं तामहि दानासो य ॥ कान बीच रस
मेली ये ॥ भी स्तूल नही होय ॥ ६१ ॥ देव
दारु व सो ठि प स्नि ॥ सैंधा सो फ मिला
यं ॥ आम्रत्र सों तप्त करि ॥ कर म प्या

जुमीटाय॥ ४२॥ शिररोगप्रतीकारादे
हैरा॥ देवदारुकुठकायफल॥ अरंडु
तैलजुमीजाय॥ कांजीसेंतवलेपी
से वातसिराजुमिटाय॥ ४३॥ कफशि
रवर्तैकह॥ पाषंरीयाछंद॥ एरंडरा
सनांकुंवजानि॥ छडक्चंत्रिधीपरा
मोथ्यागानि॥ जलतेंसोपीस जाय॥
कफंशिरावर्त्ततकालजाय॥ ४४

पित्तरोगकहलेप॥ सोरगा॥ चंदनत्रि
वाकपूर॥ दुवंऊसीरअरुआंबरे॥
कमलबीजहकबेर॥ पित्तत्रिरोंव
र्तनाशहोय॥ ८५॥ लेपत्रिरोवर्त्ति
कहं॥ दोहोरा॥ कुवंमिरचअरुका
यफलएरंडजडवचघालि॥ तत्र
नीरमोलेपीये॥ त्रिरोवर्त्तिकहरालि
॥८६॥ लेपत्रिरोवर्त्तिकहं॥ दोहारा॥ पी

परिमीस्वहरीतकी ॥ एतीनोसमभागा
कांजीसेतिलेपकरि ॥ पीराक्षिरकीजा
य ॥ ६१ ॥ आधाशीशीप्रतीकार ॥ दे
होरा ॥ कुठपीपपरे मारि वा वचमु
हलषीआन ॥ कांजीसेतिलेपकरि
आधाशीशीहानि ॥ ६८ ॥ इतिश्रीपं
डितवैद्यकेशवदासपुत्रनेंनसुष
विरचितेवैद्यमनोत्सवे वात्तपित्त

नैन०
५३

कू कगजलव्याधिनासिकानेत्रसिरो
वर्त्तिआघ्याशी सिरोगनाम षष्टोस
मुदेश॥ ६॥ अथपेरेकीऔषध
दोहोरा॥ गजकेसरतपषीरफुनि
चंदनवालापाय॥ तंडुलजलसों
पकदिप्रदररोगथंनाय॥ १॥ अपर
औषध॥ गजकुंकुमतंडुलसीतापी
जैनीरमीलाय॥ प्रदररोगकोनाश

होय ॥ मसुर सालनी पाय ॥ २ ॥ स्त्री कहु
पुहुप होन को ओषध ॥ सोंठि मिरच
अरु पीपरै ॥ खसखस डंडी ले पाय ॥ तिल के
क्वाथ सों पीजीये होय पुहुप अधिका
र ॥ ३ ॥ बत्ती बीज फुं निगुड कणा ॥ अब
र मैन फल आनने ॥ दंती सेहुंड दुग्ध सों
बाती करऊ सुज्ञान ॥ ४ ॥ जग मे राषे पा
नत्र विहोय पति सन नारि ॥ ओषध जो

नैन:
५६

गन्नुशास्त्रकहि कहोपुहउपकार ॥५८॥

ओषधगर्नीहानका ॥ सिरजफलंभ्र

रुजायफल ॥ सागरफेनमिलाय वा

युवर्डिगईलायची ॥ गज केसरसमभा

य ॥ ७ ॥ वंध्यागसनजुहोयथिर ॥ योनि

दोषसबजाय ॥ शालमुदंकगोक्षीर

पत ॥ पहफुनिपथकराय ॥ ॥ ओषध

गर्नहोणकह ॥ चोपाई ॥ सिरचेसोठ

जुपीपरिश्रानि ॥ गजकेसरजुकटाई
कानि ॥ जोघृतसोंजो पीवैवाल ॥ ताके
हगर्भरहे ततकाल ॥ ८ ॥ श्रोषधगर्भ
होएको ॥ सोरठा ॥ गजकेसरश्रस
गंध ॥ सितगोरोचनसालि ॥ पीसपी
येगोक्षीरसों ॥ गर्भहोयततकाल ॥ १० ॥
गजकेसरगोसर्पिसंगरितुश्रंतक
रेपान ॥ दुग्धभातभोजनकरे ॥ होय

बेपपगधाय ॥ प्रसूतहोयततकाल

१४ ॥ अपरं च शोर ग ॥ जडमुडीकी

आनि कटिबंधनक छीवधू ॥ नास

पीरकोजानि ॥ होयप्रसूततत काल

ही ॥ १५ ॥ नगसंकोचन ॥ दोहोरा

पांचकुंएलीफलकडुी ॥ मायिलोद

कचूर ॥ बेरजडीकनिएरछिल ॥ मा

ज नामहि चूर ॥ १८ ॥ मदनग्रे निषपा

नैन

६ ॥ यके ॥ करे पुरुष सो भोग ॥ जो निज अति
संकोच होय ॥ रहे न कोई रोग ॥ ७ ॥ अ
पर प्रयोग ॥ दोहरा ॥ मेन कुंथा वे फर
कड़ी ॥ जु लोध जु मेलि ॥ बेरजड़ी पु
निपाय के ॥ सीक न माई वेलि ॥ १८ ॥ अ
परंच ॥ त्रिफला लोध जु धाय की
जामण तुला जु होय ॥ यो न लेप जो
कीजीये ॥ वृद्धकुमारी सोय ॥ १९ ॥ यो

केजोनिका ॥ सोरगा । मवाजुगोका
कानि । धोवेजोनिजुपातउठि ॥ होय
सेकोचनजान । सिद्धियोगपंडितकहे
२० ॥ गोलीसंकोचनकी ॥ दोहोरा ॥ क
स्तूरीकपूररसमें गोलीकरिमधुपाय
जोनिबिचजबराषीये ॥ आसीके
नजाय ॥ २१ ॥ योनिसंकोचन दोहरा
नीबपातकोकाथकरि । धोवेयोनि

नै ३०

१७ ॥ जुवतीय ॥ अति दुर्गंध जु नाशा होय ॥ आ
वैदित बजु पीय ॥ २२ ॥ अथ कुचकठो
रता कहे ॥ दोहरा ॥ असगंधं मरु धाग
नकणा ॥ वच कनिअरक वसोय ॥ लेप
जु कीजे नीरसु ॥ कठिन ही कुच दोय
॥ २३ ॥ सोरठा ॥ जल तें दुजु को आनि
नासदेई त्रयदिवसं ही ॥ कठिन होय
कुचजानि प्रगट योगपंडित कही ॥ २४

श्रौषधग्रणवेलका॥ निद्राकुमारित
प्तंकरि कुचउपरजुधरेकु। ग्रणवेलेकू
नाराहोयं सिद्धियोगजाणेकु॥२४॥ पुरु
षविकीत्सा॥ श्रौषधदीर्घस्थूलदरी
करणकुह॥ दोहोरा॥ विजयाश्रर्ककै
नेरं जङु रसषंडरापाय॥ गोजीकीजे
पीसकरलीजैछ्ाइसुकाय॥२५॥ पुरु
षमत्रमोपालिकरि करहूलेपइंदियं

नैन
१८

दीर्घकठिनस्थूलहोय देषतमाजेती॥ २७॥ अपरप्रयोग॥ कचाकुवगजपीपरि॥ असगंधवलासुसोंय॥ तुरंगमूत्रनवनीतसों॥ लिंगमुत्रालसमहोय॥ २८॥ लेपस्थूलवृद्धिकरह॥ असगंधपारदगजकणा॥ रजनीसीतामिलाय लेपजुकीजेलिंगपर॥ वृद्धिस्थूलहोयजाय॥ २९॥ अपस्यंनंन॥ अजासेह

उकौ हूंषफुनि। वलजे सूजउपाय॥
करपदनानजुलेपीये। घंनहोयत्रषि
काय॥ ३७॥ मदनप्रकासचूर्णलिष्यते
दोहारा॥ तालमषाणामुसलीसोंवन
षाडापाय॥ कौंचबीजअसगंधफुनि
सेमलपुहपमिलाय॥ ३८॥ कनासत्ता
वरीमोचरस अवरलिसूडेंजानि॥ सौ
ताउथंसोंपीजीये वऊसनारतिमा
नि॥ ३९॥ अपरगुटिका॥ कुंकमसिंग

वै.न.
७८

रफजायफलतालमषाणपाय ॥ कौं
चबीजततजमंस्तकी अकलकराजुर
लाय ॥ ३३ ॥ तुंबरलवंगलमोलंपत्र
कुलिंजवपायुनआति ॥ तीननागए
जीजीये एकअफीमपरिवान ॥ ३४ ॥
रसविजयागुटिकाकरऊ ॥ परमिति
हंकजुएक ॥ रात्रिसमेमंदहुएकंरऊ
जलितरमेअनेकं ॥ ३५ ॥ दुर्गंधिहरए
प्रतीकार ॥ चोपाई ॥ चंदनरजनीमो

पक्कपूर ॥ लोदअगरपद्माषकचूर

कुंकुमरूबांगजकेसरपाय ॥ मक्षीजड

आमलेमिलाय ॥ देहीमर्दनकीजेजास

दुर्गंधिक्षताद्रोह्विनमेनास ॥ पित्तरोग

सबनासहिजान ॥ देषग्रंथमतिफसो

बषान ॥ ८८ ॥ बगलगंधकोओषधदी

होरा ॥ मोथाबेलहरीतकी बिंचाफल

फुलिपाय ॥ लेपजुकीजेनीरसुवलगं

वै०नं०
९
६०

षमिरिजाय ॥ ३२ ॥ गुटिकामुषडुर्गंध
कहु ॥ दोहोरा ॥ बेजषनेर ईलायचो
जाविर्त्री तजपाय ॥ गजकेसरगजा
यफल ॥ ए औषधसमजाय ॥ ३३ ॥ गोली
करकुमषीरसों सें करकु मुषचा
लि ॥ आनकी डुर्गंधिता नांस होहिं ता
तकाल ॥ ३४ ॥ डुर्गंधिताकोलेप ॥ चौपई
राजकेसरपहीजडपाय ॥ सिरस प्रत्र

अरु छोड़ जाय ॥ जलसों लेपजु कीजीये

दुर्गंधिता मिट जाय ॥ ७९ ॥ शिर की कर

कानी मध्य दोहोरा ॥ आनि के कोडे

की जड़ ही समान दधि पाय ॥ दुतीया पा

यके धोय के अरु आमूल मिलाय ॥ ८०

चंदनसों पामालती छीली संजुक दू

र ॥ जलसों पाव कुपी सकर होय दुर्गं

धिता दूर ॥ ८१ ॥ इति पंडित वैद्य केश

वै.न.
६२

वृदासपुत्र नेनसुषविरचिते वैद्यम
नोत्सवे ग्रंथे प्रदररोगस्त्री पुहपगर्भ
पातककष्टीस्त्रीप्रसूत लिंग छेदन बृ
द्धी वृद्धिकरण मुषदुर्गंधिता नोश्रना
मसप्तमोप्रस्तावसमाप्त इति वैद्यम
नोत्सवग्रंथसंमाप्त ॥ श्री ॥ श्री

श्री कृष्णायनमः ॥ श्री ॥ श्री ॥